



सत्यमेव जयते



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सर्वोच्च लेखाधिकार संस्थान
Dedicated to Indian Public Interest

सविता

हिन्दी ई - गृह पत्रिका
अप्रैल - सितंबर 2023

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम



सविता

हिन्दी ई - गृह पत्रिका
अप्रैल - सितंबर 2023



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम



सविता

हिन्दी ई-गृह पत्रिका
अप्रैल - सितंबर 2023

39 वां अंक

मुख्य संरक्षक

श्री बिजु जेकब

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

सुश्री अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्रीमती यशोदा

वरिष्ठ उप महालेखाकार

परामर्शदाता

श्री पी के लालू

वरिष्ठ उप महालेखाकार

सदस्य

श्री आई पी अरुण

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा

हिन्दी अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्रांबिका

हिन्दी अधिकारी

श्रीमती टी वी राधिका

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती बबिता

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री अनिता दास

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कवर पेज फोटोग्राफी: श्री विष्णु एस पी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं,
सम्पादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।

संदेश



हमारी कार्यालयीन गृह पत्रिका 'सविता' के 39वें अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक अभिनंदन।

राजभाषा का संबंध राष्ट्र की अक्षुण्ण चिंतनधारा से होता है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र की सामासिक संस्कृति की संवाहिका बनकर देश के प्रत्येक नागरिक को एक सूत्र में बांधती है। हिन्दी, राष्ट्र की मूल चेतना के साथ जनसमास के सर्वांगीण विकास को अभिव्यक्ति प्रदान करती है तथा बृहत्तर सामंजस्य को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाती है। राजभाषा हिन्दी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सहम भी हैं। यह भारत के जन-जन में बसी भाषा है अतः हमारा दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिन्दी को अपने आधिकारिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं। 'सविता' पत्रिका आपको रुचिकर लगे ऐसी हमारी मनोकामना है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजित करने में सफल होगी।

गृह पत्रिका 'सविता' के सफल प्रकाशन के लिए रचनाकारों तथा संपादक मण्डल के सदस्यों का अभिनंदन करता हूँ और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मंगलकामनाएं देता हूँ।

डॉ बिजु जेकब

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)

संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। जैसा कि हम जानते हैं भारत एक बहुभाषी देश है। हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिंदी सम्पूर्ण देश की एकता में अहम भूमिका निभा रही है। हिंदी की यही व्यापकता हिंदी की पहचान है और यही पहचान भारतीय संस्कृति की भी पहचान है। हमारी पत्रिका हिंदी में अपनी साहित्यिक रचनात्मकता को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है, जिससे कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी से जुड़ने का अवसर मिलता है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिलेगी। इस पत्रिका को अपनी रचनाओं से सुशोभित करने वाले सभी पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। संपादक मण्डल की ओर से कर्मचारियों की हिन्दी में मौलिक रचनाओं के साथ-साथ उनके बच्चों की रचनाओं और पेंटिंग को भी सम्मिलित करना एक सराहनीय प्रयास है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में समर्पित हमारी पत्रिका की अनवरत प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार

संदेश



हिन्दी ई गृह पत्रिका सविता के 39 वें अंक का प्रकाशन अत्यंत गौरव का विषय है। भारत की आजादी के 77 वर्ष पूरे होने के इस अवसर पर हर क्षेत्र में स्वावलंबी होना हर भारतीय का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए। इस लक्ष्य में देश की मिट्टी से जुड़ी राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार संवैधानिक दायित्व होने के साथ-साथ हमारे लक्ष्य की दिशा में एक बड़ा कदम भी है। इस लक्ष्य की ओर गतिमान राजभाषा विभाग के प्रयत्नों को साकार करने में कार्यालयों द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी को बढ़ावा देने के साथ-साथ प्रतिभाशाली कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक रुचि एवं काव्यात्मक भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करता है। हमारी पत्रिका भी इस लक्ष्य की दिशा में हमारा विनम्र योगदान है। इस अंक के सफल प्रकाशन से जुड़े संपादक मण्डल एवं अपनी रचनाओं से इसे अलंकृत किए पदाधिकारीगण का योगदान प्रशंसनीय है। सविता के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

जय हिन्दी ! जय हिन्द !

लालू पी के

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

संपादकीय



भारत एक बहुभाषी तथा विविध संस्कृति वाला देश है जिसमें केरल दक्षिण भारत का एक बहुत ही खूबसूरत राज्य है। एक समान प्रतीत होते हुए भी यह विविधताओं से भरा हुआ है। यहाँ के लोगों के जीवन में एक अद्भुत मधुरता और संतुष्टि का भाव दिखाई देता है। सामान्य लोग भी यहाँ जीवन को हर्षोल्लास से जीते हैं।

कार्यालयीन गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जाना अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका का प्रकाशन, कार्यालय के कार्मिकों की अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि के साथ-साथ राजभाषा का प्रचार-प्रसार भी सुनिश्चित करता है। अतः मैं कामना करती हूँ कि यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों के बीच हिन्दी के प्रयोग के प्रति रुचि उत्पन्न करने एवं इसे लोकप्रिय बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

किसी देश की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को भाषा के माध्यम से ही संजोया जा सकता है। समाज का स्वरूप और आईना वह भाषा होती है जो देश को एकता, अखंडता के धागे में बांध कर रखती है। हिन्दी भाषा न केवल भारतवर्ष की राजभाषा है अपितु यह भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक धरोहर का स्वरूप भी है। विभागीय रचनाकारों ने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करने, वर्ष भर कार्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों को प्रदर्शित करने तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने की दिशा में विभागीय हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन एक सार्थक और सफल कदम है। यह पत्रिका अपने प्रकाश की किरणें बिखेरती हुई राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के अपने लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है। कार्यालय के पत्रिका परिवार का सदैव यह प्रयास रहा है कि पाठकों की पठन-पाठन व लेखन में रुचि बनी रहे।

मैं पत्रिका को लोकप्रिय एवं सुसज्जित बनाने के लिए सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादन में सहयोग देने वाले सहयोगियों को पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु बधाई देती हूँ, साथ ही भविष्य में भी इस प्रकार के सहयोग को बनाए रखने की आशा करती हूँ। संपादक के रूप में सभी रचनाकारों से मेरा अनुरोध है कि आप हिन्दी की आधिकारिक, उत्कृष्ट रचनाएं इस पत्रिका के जरिए पाठकों तक पहुंचाएं। पाठकगण भी अपने विचार एवं सुझाव हमें देते रहें जिससे पत्रिका के स्वरूप को आकर्षक बनाया जा सके। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यशोदा

वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन व लेप.प्र.स. III



सुमन



श्री अनुराग शुक्ला
लेखापरीक्षक

सुमन मौन थी। मन में अजीब-सी ऊहापोह चल रही थी। माता-पिता की इकलौती लाडली थी और साधारण परिवारों की तरह उनकी अपेक्षा भी यही थी कि सुमन कोई अच्छी डिग्री प्राप्त कर लें जिससे समाज में प्रतिष्ठा और परिणाम स्वरूप विवाह हेतु एक अच्छे वर की तलाश सुगमता से हो सके। यही विचार कर उन्होंने सुमन का इंजीनियरिंग की कोचिंग हेतु दाखिला कराया था। अब सुमन की समस्या यह थी कि उसको इंजीनियरिंग में लेशमात्र भी रुचि नहीं थी।

सुमन के मन में यही ज्वार-भाटा हिचकोले ले रहा था कि वह अपने मन की बात अभिभावकों को कैसे व्यक्त करें? अन्वतेगत्वा सुमन ने साहस जुटाया व निश्चित किया कि वह एकबार अपने मन की बात से माता-पिता को अवश्य अवगत कराएगी। अतः यह बात कि उसकी रुचि अध्यापक बनने में है - इंजीनियर बनने में नहीं, अपने माता-पिता के समक्ष रख दी। आरंभ में सुमन के अभिभावकों को समाज व रिश्तेदारों के प्रश्नों व टिप्पणियों का भय हुआ, परन्तु अपनी लाडली की भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्होंने स्वीकृति दे दी।

निश्चित ही सुमन की आँखों में पुरानी चमक लौट आई थी। अपने अध्यापक बनने के लक्ष्य हेतु ज़रूरी पाठ्यक्रम संचित कर अनिवार्य परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर दी थी। अपने रुचिकर मार्ग में अग्रसर होकर सुमन में एक नई ऊर्जा का संचार हो चुका था। सारी निराशा व अनिश्चितता छूमंतर हो चुकी थी। जब सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हो तो कोई भी लक्ष्य दुष्कर नहीं होता और परिणामस्वरूप सुमन ने सभी अनिवार्य योग्यताओं को अर्जित करते हुए सरकारी विद्यालय में नौकरी हासिल कर ली। बच्चों से संपर्क और उनके जीवन को दिशा देने का नूतन कार्य अब सफल हो चुका था और निश्चित रूप से सुमन बहुत रोमांचित थी। माता-पिता भी अपनी दुलारी के प्रयास से खुश थे।

हमारे परिवेश में अनगिनत सुमन हैं जिनके भीतर बहुत कुछ कर गुजरने की भावना भी उद्बलित हो रही है। वह विभिन्न क्षेत्रों में कुछ कर दिखाने की क्षमता रखती हैं और अग्रणी होकर अपने परिवार, समाज एवं देश को गौरवान्वित कर सकती हैं। सुमन के माता-पिता ने उसके मन की बात व भावनाओं का सम्मान करके, सामाजिक निषेधों को परे रखते हुए उसका साथ दिया और यह ही आज के युग की आवश्यकता है। हमें किसी भी प्रकार से अपनी सुमन के मार्ग का अवरोधक नहीं बनना है। फिर देखिएगा, उसके पंखों की उड़ान किस ऊँचाई पर जाके रुकेगी, इसकी कल्पना करना भी संभव नहीं है। पी वी सिंधु, कल्पना चावला, मैरी कॉम, मिताली राज, सुष्मिता सेन, अवनी चतुर्वेदी आदि-यह ऐसे नाम हैं जो किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।

हमें हर सुमन का सम्मान करना है, उसको बराबरी का अवसर कागज पर नहीं, धरातल पर देना होगा। पुरुष व महिला समाज के बराबर के स्तंभ हैं और दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, न कोई बड़ा न ही कोई छोटा। खुली सोच व नजरिए से एक मजबूत, स्वावलंबी सुमन चमत्कारिक परिवर्तन का पर्याय बनेगी, इसका तनिक भी संदेह किसी को नहीं होना चाहिए। तो फिर क्या विचार कर रहे हैं? क्या आपने अपने आस-पास किसी सुमन को देखा है???



बदलती तकनीक का ज़माना और हम

दीपक, डीईओ

तकनीक किस तरह से बदल रही है, कैसे हमारी जिंदगी पर तकनीक के कारण प्रभाव पड़ रहा है, खासकर पिछले 10 साल में तो एक क्वान्टम जंप आया है। हर किसी को सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती। आखिर में लाखों लोगों को प्राइवेट सेक्टर या दूसरे क्षेत्र में ही रोजगार के अवसर ढूँढने पड़ते हैं। ऐसे में समय के साथ खुद को अपडेट करते रहना आज बेहद जरूरी हो गया है।

दरअसल लोग मानने को तैयार ही नहीं हैं कि वह मानव इतिहास के अभी तक के सबसे तेज बदलाव वाले समय में जी रहे हैं। यहां परिवर्तन ही एकमात्र सच्चाई है। हर 5 साल में आपको बदलना ही होगा, आगे आने वाले बदलावों के अनुसार अपने आपको ढालना ही होगा और यह सिर्फ नौकरी तक सीमित नहीं है, व्यापार पर भी यही बात लागू होती है क्योंकि अगर आप बदलेंगे नहीं तो खत्म हो जाएंगे तो आपकी जगह कोई और आ जाएगा जो इस बदलते समय के साथ चलने को तैयार हो।

एक ज़माना आई टी, आई आई टीज़, बी पी ओ, एल पी ओ का थाआई टी में भी गिनी चुनी प्रोफाइल हुआ करती थी। 2006 में किसी ने क्लाउड एक्सपर्ट, क्लाउड आर्किटेक्ट, डाटा साइंटिस्ट, एआई डेवलपर, मशीन लर्निंग एक्सपर्ट, बिग डाटा एक्सपर्ट, आईटीआईएल एक्सपर्ट, एजाइल कोच, क्वान्टम कंप्यूटिंग डेवलपर, फुल स्टैक डेवलपर, नोड, जे एस रिएक्ट, जे एस डेवलपर, आई आर/वी आर डेवलपर जैसी प्रोफाइल्स या काम के बारे में सुना भी नहीं होगा लेकिन आज आईटी में यही प्रोफाइल मिलेंगी।

उस समय ना कोई मोबाइल एप्लीकेशन हुआ करती थी.... ओला, उबर, ज़ोमैटो, स्विगी जैसी सेवाएं नहीं थी, आज इन कंपनियों में लाखों लोग काम करते हैं. बार्बर, कारपेंटर, ब्यूटी पार्लर, फ़ोन एंड इलेक्ट्रॉनिक रिपेयर जैसे कामों के लिए दुकान पर जाना पड़ता था ... आज ऐप के ज़रिये यह सब आपको घर पर आ कर सेवाएं दे कर जाते हैं ...क्या सोचा था आपने ऐसा होगा?? आज भी टूरिज़्म पूरा बदल चुका है, ऑनलाइन बुकिंग से लेकर वर्केशन (वर्क + वेकेशन) जैसी अवधारणाओं ने आपके घूमने फिरने के तरीके को बदल दिया है ...क्या इसके बारे में सोचा था? लॉजिस्टिक की ही बात करें 15 साल पहले भारतीय डाक सेवा थी और गिनती के कुछ वेंडर हुआ करते थे ...आज ढेरों सेवा प्रदाता हैं ... एक ही दिन में 30 मिनट में डिलीवरी मिल रही है क्या सोचा था कि ऐसा होगा? जिन जंगलो, पहाड़ो और बीहड़ो में जाने में कई कई दिन लगते थे, आज वहाँ ड्रोन से दवाई और अन्य सामान कुछ ही मिनटों में पहुंचाये जा रहे हैं। पहले हर दूसरे दिन एटीएम जाना पड़ता था पैसे निकालने के लिए अब महीने में एक बार भी चले गए तो बड़ी बात है, बैंक भी अब घर पर सेवाएं देने लगे हैं। महत्वपूर्ण उपभोक्ता और बड़े बूढ़ों को घर पर ही भुगतान या जमा की सुविधा मिलती है। अपने आस पास के व्यापार देखिये ...अधिकतर ऑनलाइन मार्केटप्लेस पर रजिस्टर्ड हैं। बड़ी संख्या में होम डिलीवरी की सेवाएं दी जाती है, आस पास की हलवाई की दुकान से लेकर फल सब्जी की दुकाने भी ऐप्स पर उपलब्ध हैं।



आज देश भर में इस क्षेत्र में लाखों ऐसी नौकरियां उत्पन्न हुई हैं जो पहले नहीं हुआ करती थी 80,000 से ज्यादा स्टार्टअप हैं, एकदम नई नई अवधारणाओं वाले व्यापार भी बाज़ार में आ गए हैं और मोटा पैसा भी छाप रहे हैं हैं। सोशल मीडिया की ही बात करें 2006 में ऑरकुट हुआ करता था। उस ज़माने में किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि यह माध्यम लोगों को करोड़पति भी बना सकता है। सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर, रील एक्टर, फोटो वीडियो एडिटर, म्यूजिक डेवलपर, ऑनलाइन कंटेंट डेवलपर और मैनेजर जैसी लाखों नौकरियां पैदा हुई हैं।

यूट्यूब ने ही सैकड़ों करोड़पति और हज़ारों लखपति बना दिए हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर से भी लाखों लोगों का जीवन बदला है.....ऐसे ऐसे काम शुरू हुए हैं जो किसी ने सोचे नहीं होंगे. क्या आपने सोचा था खाना, कार, घूमने जाने का ब्लॉग बना कर कोई महीने के लाखों कमा पायेगा ? लेकिन आज ऐसे ढेरों लोग हैं।

आज ऐसे ढेरों लोग हैं जो ऑनलाइन फ्री लैसिंग का काम करते हैं पहाड़ो पर, जंगलो में, नदी तलाबों के किनारे रहते हैं, अमेरिका और यूरोप के उपभोक्ताओं का काम करते हैं ...अच्छा कमाते हैं ...जिंदगी जीते हैंक्या आपने 13-14 साल पहले ऐसे कामों के बारे में सोचा भी था ? हमारे हिसाब से तो काम करने के लिए कार्यालय जाना ज़रूरी होता था, आज नहीं है।

आप आज जो काम कर रहे हैं ...हो सकता है आज से 5 साल बाद उस काम का अस्तित्व ही ना होआप सोच रहे हैं कि आप अपने बच्चों को डॉक्टर इंजीनियर बनाएंगे ...हो सकता है 15-20 साल बाद यह प्रोफाइल्स ही ना रहें....रहें भी तो बदल चुकी हों, यही बदलाव है और हमें इसके साथ ही जीना होगा क्योंकि पीछे रहने का स्कोप नहीं है। बाकी नौकरियों के लिए तो यही कहूंगा कि नौकरियां कभी ख़त्म नहीं होती उनका स्वरूप बदल जाता है। 2006 में भारत में जितने लोग नौकरी कर रहे थे, आज उससे कहीं ज़्यादा कर रहे हैं, कहीं ज़्यादा लोग अरबपति ,करोड़पति ,लखपति हैंकहीं ज़्यादा लोग मध्यमवर्ग से उच्च मध्यम वर्ग में जा चुके हैं, करोड़ों लोअर क्लास से मिडिल क्लास में जा चुके हैं, यह नौकरी या काम धंधों के बिना संभव नहीं है।



इस तेज़ी से बदलते समय में अपने आपको बचाने का एकमात्र उपाय है ...समय के साथ बदलना इसलिए समय की यही पुकार है कि अपने आपको हमेशा अद्यतन बनाए रखें और तकनीकी को अपना दोस्त समझें और उसका फायदा उठा कर अपने काम में उत्कृष्टता लाएं।





साई कुमार जे ए
कल्याण सहायक

हिंदू पुराणों में महिला सशक्तिकरण



रामायण, महाभारत, भागवत एवं पुराणों में महिलाओं की सेवा क्षमता के विषय में प्रतिपादन किया गया है। हिंदू धर्म ग्रंथों में उल्लिखित कुछ गौण स्त्री पात्र हैं:

रामायण में एक वयोवृद्ध नारी थी मंथरा जो महारानी कैकेयी की घरेलू नौकरानी थी जिसे महारानी कैकेयी अपने मायके से (दासी के रूप में) साथ लायी थीं। कैकेयी के मन को प्रभावित करने की शक्ति उस महिला में थी। मन्थरा एक विस्मयकारी सलाहकार भी थी।

रामायण में और एक गौण पत्र है लंकिनी वह राज्य की एक प्रमुख महिला सेनानी थी। वह बलवति और शक्तिशालिनी भी थी और तो और निषाद दृष्टि वाली थी।

विभीषण की पुत्री त्रिजटा माता सीता की निगरानी के काम में लगी हुई थी। वह बहुत सुविज्ञ थी। रामायण में त्रिजटा का स्वप्न एक महत्वपूर्ण कथा है। माता सीता का धैर्य बनाने के लिए त्रिजटा सुलझे विचार प्रकट करती थी।

प्रभु श्रीराम जी के पूर्वज महाराज हरिश्चंद्र की धर्मपत्नी माता चन्द्रमती या तारामती अपना पूरा राज्य खोने के बाद खुद को बेच कर राजा कालकौशिक की दासी बन कर जी रही थी। इस महादेवी ने जीवन के अनेक कष्टों को स्वीकार किया और कठिनाइयों के समय में भी महा धैर्यशाली बनी रही।

अब आता है महाभारत का विषय। देवी द्रौपदी अज्ञातवास के समय विराट राज की पत्नी के पास काम में लग गई थी। वह सैरंध्री के नाम से केश अलंकार करने के काम में लगी थी। सैरंध्री सुगंधित द्रव्य बनाने में भी विशेषज्ञ थी।

भागवत में त्रिविका नाम से प्रसिद्ध एक स्त्री पात्र है। उनका एक और नाम था कुब्जा। उनका कद कम था और वह बौनी थी। उनको वक्र नाम से बुलाया जाता था। राक्षस राज कंस के अंतःपुर में काम करने वाली थी। राजा कंस का पसंदीदा मधुर लेप बनाने में वह माहिर थी। कुब्जा और श्रीकृष्ण भगवान की कथा बहुत मनोरंजक और सुनने के लिए सुंदर कहानी है। श्रीकृष्ण भगवान ने कुब्जा का न केवल बाह्य सौन्दर्य बल्कि अन्तः सौन्दर्य भी देखा था।



वही भागवत में पूतना नाम की एक राक्षसी कंस के पास काम कर रही थी। ये पूतना कंस की गुप्तचर थी। उसने कृष्ण भगवान का अंत करने की विभिन्न योजनाएं बनाई थीं। इस काम के लिए वह केवल एक महिला गुप्तचर ही नहीं वास्तव में एक योद्धा थी।



इंद्र लोक से स्वर्ग में रम्भा, उर्वशी, मेनका, तिलोत्तमा आदि महिलाएं थीं। वे साधारण कर्तव्य के अलावा प्रत्येक लक्ष्य से संबंधित कर्तव्य भी करती थीं।



अब बारी है तृतीय लिंग से संबंधित व्यक्तियों के बारे में बात करने की, वे हमें महाकाव्य महाभारत में दिखाई देंगे जैसे शिखंडी, बृहन्नला। बृहन्नला कोई और नहीं वीर योद्धा अर्जुन है। पुरुष होने के बावजूद कर्तव्य के कारण अल्प काल के लिए तृतीय लिंग के व्यक्ति में बदल गए। अपनी प्रतिभा से राज्य में स्थान ही नहीं प्राप्त किया बल्कि राजकुमार उत्तमकुमार को युद्ध के लिए सिद्ध भी किया। बृहन्नला एक स्वरूपी पात्र है जिसने खुद सारथी बनकर सारे राज परिवार पर प्रभाव डालने वाले व्यक्ति बनकर अत्यंत गौरव प्राप्त किया।



शिखंडी- महाभारत के एक और भिन्न पात्र थे। जिसने स्त्री के रूप में जन्म लिया परन्तु पितामह भीष्म का वध करने के लिए पुरुष के रूप में बदल गए अद्भुत चरित्रवान व्यक्ति थे। प्रतिज्ञा की पूर्ति करने के लिए उनके पास बिना लालच के तपन से भरा वीर का हृदय था।

उसके बाद उन्नीसवीं सदी में महिलाएं जब घर से बाहर काम के लिए निकली, तब वे गृहणी होने के अलावा घर से बाहर काम करने लगी तो समाज में उन्हें कुछ भिन्न रूप से देखा जाता था। परन्तु एक बात तो सच है महिला घर में रहे या घर से बाहर उन्होंने हर विषय में अपने अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण हिंदू पुराण है। ●



श्रीमती जे आर आशा
हिन्दी अधिकारी

सिंगापुर - 'कान्क्रीट से उगता गुलाब'

दुनिया के सबसे समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं में से एक और नवाचार के एशियाई चमत्कार के रूप में वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बनाई सिंगापुर - लॉयन सिटी - को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। गर्मी की छुट्टियों में मुझे अपने परिवार के साथ इस खूबसूरत द्वीप शहर का दौरा करने का अवसर मिला। प्राकृतिक दुनिया को संरक्षित करने में रचनात्मक ध्यान के साथ तकनीकी प्रगति को जोड़ने वाली सिंगापुर की प्रभावशाली शहर योजना और जीवनशैली विकल्पों ने हम सबका दिल जीत लिया।

जो बात सिंगापुर को मानव रचना का ऐसा अजूबा बनाती है, वह है सुमात्रा साम्राज्य के अधीन मलेशियाई प्रायद्वीप के अंत में बसे एक साधारण मछुवारों के गाँव से इसका उदय। बाद में यह ब्रिटिश राज का उपनिवेश बन गया और विश्व युद्धों के दौरान जापानियों के कब्जे में दब गया, अंततः 1965 में मलेशिया संघ से निष्कासन के बाद एक स्वतंत्र गणराज्य बन गया। आज अपने विश्व स्तरीय भूमि सुधार के उपायों (सिंगापुर आवास विकास बोर्ड के सौजन्य से) तथा अपने अल्प प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण उपयोग करके विकास में सतत विकास की घोषणा करने वाले अनूठे दृष्टिकोण से लगभग 5 दशकों में ही सिंगापुर एक शहरी आभूषण के रूप में विकसित हो गया है। यह बात शहर की पहली झलक मशहूर चांगी हवाई अड्डे से ही स्पष्ट हो जाती है, जिसे कई बार दुनिया के सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डे के रूप में मान्यता मिली है। एक वास्तुशिल्प चमत्कार चांगी हवाई अड्डे में मूवी थिएटर, मनोरंजन और शॉपिंग

सेंटर और छत पर जकूजी से लेकर तितली उद्यान, 'कोई' मछली तालाब और उसके बिल्कुल केंद्र में एक आश्चर्यजनक गोलाकार फाउन्टन और उसके चारों ओर प्रकृति की सुंदरता को समेटते हुए हवाई अड्डा अपने आप में वह सब कुछ पेश करता है जो एक आरामदायक और रोमांचक यात्रा अनुभव के लिए आवश्यक है।

लेकिन एक बार जब आप हवाई अड्डे से बाहर कदम रखते हैं तो यह शहर आंखों के लिए एक दावत बन जाता है, जिसमें मरीना बे सैंड्स होटल जैसे क्षितिज पर शानदार वास्तुशिल्प चमत्कार दिखाई देते हैं, सौर ऊर्जा से चलने वाले गार्डेन्स बाइ द बे, कला विज्ञान संग्रहालय जो सफेद कमल के फूल की याद दिलाता है जिसे 'सिंगापुर का स्वागत करने वाला हाथ' कहा जाता है और कई अन्य शानदार खूबसूरत संरचनाएं हैं जो आपको आश्चर्यचकित कर देती हैं। मेरी पसंदीदा में से एक मरीना बे सैंड्स में सेब की फ्लोटिंग दुकान थी जो पानी पर तैरती डिस्को बॉल की तरह दिखती है।

सड़कें असाधारण रूप से साफ-सुथरी हैं, जिनमें कूड़े-कचरे का कोई निशान नहीं है और हर कोने में पार्क और लॉन और गमलों में पेड़-पौधों के साथ हरियाली छाई हुई है, जो हमें शहरी भारत की धूल भरी भागदौड़ से काफी अलग लगती है। सिंगापुर का यातायात वाकई में सराहनीय है, अनुशासन को बनाये रखने और कानूनों के पालन करने में यहां के लोग अविश्वसनीय रूप से अपने आप नियंत्रण रखते हैं। वास्तव में मैंने कभी भी इस शांत लेकिन जीवंत शहर में हॉर्न बजाते हुए नहीं सुना।



‘मरीना बे सैंड्स’ सिंगापुर में मरीना बे के सामने एक एकीकृत रिसॉर्ट है। ‘मरीना बे सैंड्स’ को उसके घुमावदार टावरों और इसके शीर्ष पर ताश से प्रेरित कूज जहाज के आकार के स्काईपार्क से कोई भी आसानी से पहचान सकता है। इस लग्जरी होटल में कमरे और लग्जरी सुइट्स के तीन 55-मंजिला टॉवर शामिल हैं। पर्यटक मरीना बे से शहर के मनमोहक विहंगम दृश्य के लिए शीर्ष डेक तक जा सकते हैं वहां से शहर का नज़ारा काफी लुभावना है जैसे शहर आपके नीचे एक शानदार बहुरंगी चित्रकारी के समान फैला हुआ हो। गगनचुंबी होटल के भीतर, सब कुछ ऊंचा और शानदार दिखता है, विशाल गमलों में लगाए गए पतले पेड़ एक अत्याधुनिक गुड़ियाघर में मिनिएचर की तरह महसूस कराते हैं।

सिंगापुर का सबसे प्रतिष्ठित प्रतीक और इसके बारे में सोचते ही हर किसी के दिमाग में जो प्रतीक आता है, वह है ‘मेरलियन’। शहर के केंद्र में मरीना बे सैंड्स होटल के बीचोबीच बसा मेरलियन, शहर के केंद्र के चारों ओर दर्जनों गगनचुंबी इमारतों की तुलना में कुछ हद तक छोटा दिखाई देता है। मेरलियन की मूर्ति मछुवारों के गांव ‘टेमासेक’ के अतीत का प्रतिनिधित्व करती है, इसका नाम “मेर”, जिसका अर्थ है समुद्र, और “लॉयन” शेर को जोड़कर बनाया है, जिसका अर्थ है “समुद्री शहर”। शेर का शीर्ष और मछली का शरीर। सिंगापुर की उत्पत्ति जो मछुवारों के गांव के रूप में दर्शाता है, जब इसे टेमासेक कहा जाता था। सिंगा-पुर या शेर शहर की उत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि इसका नाम श्रीविजय राजकुमार द्वारा रखा गया था, जिसने इस भूमि को जीतने के बाद पहली बार इस देश में प्रवेश करते समय एक बाघ को देखकर शेर समझ लिया था। यह जगह चारों ओर से वास्तुशिल्प,

कलात्मक और तकनीकी रूपों से घिरा हुआ है और फोटो लेने के लिए यह एक उत्तम स्थान है। हम पीछे की ओर झुकते हुए तरह-तरह से फोटो खींचने में लग गए कि हमारे सिर ऐसे दिखें जैसे हम मेरलियन के मुँह से पानी पी रहे हों।

जैसे ही सूरज डूबता है, शहर रोशनी और लोगों की चकाचौंध में डूब जाता है। यहां के उद्यानों को वास्तव में सिंगापुर को उद्यान शहर से ‘उद्यान के भीतर शहर’ में बदलने की दृष्टि से डिजाइन किया गया था। दिन के अंत में घूमने के लिए एक सुंदर स्थान हैं गार्डन बाय द बे, यहाँ हरियाली के बीच साइकिल की सवारी या पैदल जा सकते हैं। सुपरट्री ओब्सर्वेटरी, पार्क और खाड़ी के अद्भुत प्राकृतिक दृश्य पेश करती हैं और जैसे ही शाम ढलती है वे जीवंत हो उठते हैं और 15 मिनट के संगीत शो के लिए जगमगाने लगते हैं, स्थानीय लोग और पर्यटक इसके नीचे खड़े होकर या जमीन पर बैठकर इस शो का आनंद लेते हैं। गार्डन बाय द बे में फूलों के गुंबद भी हैं, जो दुनिया का सबसे बड़ा कांच का ग्रीनहाउस है, जिसमें खाड़ी के किनारे पर दो कांच के गुंबद हैं और कोने-कोने में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। ग्रीनहाउस हजारों शानदार फूलों और पुष्प प्रदर्शिनियों, थीम आधारित मूर्तियों और बहुत सारी कलाकृतियों को पेश करते हैं। हम हर जगह तस्वीरें खींचने से खुद को नहीं रोक सके। सचमुच ज़मीन पर एक जन्नत।

अगले दिन हम सेंटोसा द्वीप गए। सेंटोसा द्वीप, चमकीले समुद्र तटों, रिसॉर्टों और थीम पार्कों का स्वर्ग (जिनमें से सबसे लोकप्रिय यूनिवर्सल स्टूडियो है), पर्यटकों और स्थानीय लोग दोनों के लिए एक प्रमुख स्थान है। इसकी वर्तमान जीवंत, हर्षित आभा के पीछे क्रूर समुद्री डाकुओं और जेल शिविरों का एक क्रूर अतीत छिपा है। 1970 के



दशक में सिंगापुर सरकार द्वारा इसे एक ऐश—आराम की जगह के तौर पर परिवर्तित करने से पहले सेंटोसा को क्रूर समुद्री डाकुओं और युद्ध शिविर के एक क्रूर कैदी के रूप में जाना जाता था। जो इसके पूर्व नाम से पता चलता है - पुलाउ ब्लाकड माटी - मतलब द्वीप जिसके पीछे मौत छिपी है, जो कई प्राचीन मलय योद्धाओं की कब्रगाह थी। हालाँकि, आज यह द्वीप खुशी से भरपूर जगह में तब्दील हो गया है (सेंटोसा का शाब्दिक अर्थ संस्कृत शब्द संतोष से लिया गया है) और साथ ही उन्होंने फोर्ट सिलोसो जैसे राष्ट्रीय स्मारकों के माध्यम से अपने इतिहास को भी संरक्षित कर भी दिया है।

अफसोस की बात है कि समय की कमी के कारण, हमें अपनी सैर को केवल यूनिवर्सल और विंग्स ऑफ टाइम नामक शानदार लाइट शो तक सीमित रखना पड़ा। यूनिवर्सल स्टूडियो के अनेक दृश्य, संगीत, मनोरंजन और भोजन आपके दिन को खुशियों से भर देंगे। प्रवेश द्वार के पास कांच की दीवारों के पीछे एक समुद्री दुनिया तैर रही है जहां हम कांच की सुरंगों के नीचे से चल सकते हैं जहां डॉल्फिन, शार्क, स्टिंगरे और कई अन्य मछली प्रजातियां सभी दिशाओं से आएंगी, जो हमें नीली रोशनी और लहरों से सराबोर कर देंगी। थीम पार्क का पहला भाग हॉलीवुड है - कोबलस्टोन से बनी सड़कों, फुटपाथ की दुकानों और इमारतों के साथ हलचल भरी सड़कें जो पुराने अमेरिकी ब्लॉकबस्टर और कई सिनेमाई पलों की यादों को ताज़ा कर दिया।

बीच-बीच में लोकप्रिय यूनिवर्सल पात्रों से मिलने, बातचीत करने और उनके साथ फोटो लेने का भी मौका मिलता है, जिनमें से सबसे लोकप्रिय मिनीयन और सेसम स्ट्रीट हैं, जहां लोग कुछ सेकंड

की मजेदार बातचीत और तस्वीरों के लिए बहुत समय तक कतार में खड़े रहते हैं। हम अपने पसंदीदा मिनीयन के साथ तस्वीरें लेने के लिए उत्साहित थे और हमें बॉब के साथ हाथ मिलाके नाचने का मौका भी मिला।

पार्क की एक और लोकप्रिय जगह है जुरासिक पार्क, जहां हर कोने में जीवंत डायनासोर नमूनों को देख सकते हैं, पार्क के अंदर हर जगह बजने वाला जुरासिक पार्क थीम साउंडट्रैक और साथ ही एक साहसिक सवारी जिसे रिवर रैपिड्स कहा जाता है, जहां आपको एक गोलाकार नाव में बैठाया जाएगा और लंबी घुमावदार नदी की सवारी में ले जाएगा, जिससे आपको ऐसा महसूस होगा जैसा कि आप वास्तव में फिल्मों में हैं। एक ठंडी रेन फॉरेस्ट सेटिंग आपको ऐसा महसूस कराती है जैसे आप वास्तव में जंगल में हैं और प्रागैतिहासिक जानवरों से भरे एक अलग पार्क में जीवित रहने के मिशन पर है। जुरासिक पार्क का मीट एंड ग्रीट इवेंट ने मुझे अचंभित कर दिया क्योंकि यह कोई और नहीं बल्कि फ्रैंचाइज की नवीनतम फिल्मों का ऐकोनिक वेलोसिरैप्टर 'ब्लू' था, एक अद्भुत रोबोट जो आश्चर्यजनक रूप से जीवंत हरकतों, शारीरिक हाव-भाव और गुराहट के साथ एक रैप्टर ट्रेनर के रूप में आये पार्क कर्मचारी के आदेशों का पालन करके बिल्कुल जीवंत दिखता था।

स्टूडियो में फिल्म थ्रेक को समर्पित एक पार्क भी है, जिसमें एक सुंदर महल की सेटिंग और पास में थीम वाले रेस्तरां और दुकानें हैं, साथ ही ममी फिल्मों से प्रेरित मिस्त्र की मूर्तियां, राइड और खाद्य स्टॉल भी हैं। अपने सामान्य भारतीय भोजन के बजाय, हमने उस दिन पूर्वी एशियाई भोजन खाया जैसे नूडल्स के साथ ब्रेज्ड पोर्क के साथ तले हुए झींगे



और गर्मी से बचने के लिए बांडुंग (ठंडा दूध के साथ गुलाब सिरप) और आइस्ड चाय पी।

यह द्वीप विभिन्न जगहों पर फैले मोनोरेल के नेटवर्क के जरिए आपस में जुड़ा हुआ है और साथ ही इसे मुख्य भूमि से भी जोड़ता है। उसमें सवार हुए हम शाम तक 'विंग्स ऑफ़ टाइम' नामक लाइट एण्ड साउन्ड शो देखने के लिए एक शांत समुद्र तटीय पार्क जैसे स्थान पर पहुँच गए। यहां समुद्र तट पर एक ओपन एयर थिएटर जैसी सेटिंग थी, जहां से सूर्यास्त का चमकीला दृश्य दिखाई देता था और किनारे के आधे हिस्से में लकड़ी के त्रिकोणीय पैनलों की एक बड़ी कला स्थापना की गई थी जिस पर रंग-बिरंगी रोशनी डाली जाती है। शो में आकर्षण जोड़ने के लिए पारंपरिक सादे सपाट सतहों के बजाय इस तरह का एक रचनात्मक संरचना के अनूठे आकार ने मेरा ध्यान आकर्षित किया क्योंकि दिन के समय भी इसकी खूबसूरती एक सुंदर कला कृति के रूप में दोगुनी हो जाती है। रंग-बिरंगे नाचते फव्वारों, पानी की बौछारों और अंत में आतिशबाजी के शानदार प्रदर्शन के साथ यह शो अत्यंत लुभावना था। समुद्र तट की नीरव और शांतिपूर्ण सेटिंग, संध्या के समय सिंगापुर का क्षितिज और दूर तक टिमटिमाते जहाज़ इस शानदार शो को एक अनूठा अनुभव और जीवन भर याद रखने योग्य स्मृति बनाते हैं।

अगला दिन शहर में हमारा आखिरी दिन था, जिसकी शुरुआत हमने लाल बीन पेस्ट से भरे नरम उबले हुए बन्स, सॉसेज, फ्राइड राइस और फल के स्वादिष्ट पूर्वी एशियाई नाश्ते के साथ की। उसके बाद हम शॉपिंग के लिए एक ड्यूटी फ्री दुकान पर गए, वहां से हमने मेरलियन और मरीना बे सैंड्स होटल की छोटी प्रतिकृतियां, सिंगापुर शब्द के साथ मुद्रित बैग, जीवंत और सुंदर कीचेइन और निश्चित रूप से सिंगापुर की चॉकलेट भी खरीदी।

सिंगापुर डॉलर का मूल्य लगभग 60 से 65 रुपये अधिक होने के बावजूद, ड्यूटी फ्री दुकानें अपेक्षाकृत किफायती कीमत पर दोस्तों और परिवार वालों के लिए कुछ ले जाने के लिए गुणवत्तापूर्ण स्मृति चिन्ह खरीदने का सबसे अच्छा खरीदारी अनुभव प्रदान करती हैं। और अंत में, उस शानदार सुंदर शहर सिंगापुर से हम अपनी वापसी यात्रा की साढ़े चार घंटे की उड़ान के लिए चांगी हवाईअड्डे की ओर रवाना हुए।

इस शहर ने सबसे सुंदर और सुव्यवस्थित शहरों में एक के रूप में हमारे दिलों में बहुत गहरी छाप छोड़ी है, जिसका हमें अनुभव करने का सौभाग्य मिला। इसकी जीवंत और सतत विकास पर आधारित जीवन शैली के लगभग हर चीज़ (सैनिटरी उद्देश्यों के लिए टॉयलेट पेपर के उपयोग को छोड़कर) सराहनीय और विस्मयकारी थी और मैं किसी दिन एक बार फिर इस शहर में वापस जाना चाहती हूँ।



केरल एक्सप्रेस : मेरी केरल यात्रा



श्री संभव श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन एक असीम और अनंत यात्रा है जो मनुष्य के माँ के गर्भ में आते ही आरंभ हो जाती है किन्तु मनुष्य के मरणोपरांत भी चलती रहती है। मनुष्य चला जाता है लेकिन उसके विचार यहीं इसी धरती पर वास करते रह जाते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण कुछ लोग इन विचारों को अपने अनुसार अपने लाभ के रुचि में हेरफेर करके प्रयोग करते रहते हैं।

वर्ष 2020 में मैं लखनऊ, उत्तर प्रदेश में रह रहा था जब मार्च के महीने में मुझे कार्यालय प्रधान महालेखाकार केरल से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के पद के लिए नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। यह समाचार इतना सुखद था कि मन हर्षित तो हो उठा किन्तु उस समय हमारा विश्व एक बहुत बड़ी विपदा, एक महामारी से जूझ रहा था। कोरोना का प्रकोप पूरे विश्व को अपने चपेट में लिया हुआ था और सारे देशों ने इसको नियंत्रित करने में अपने एंडी चोटी का जोर लगाया हुआ था। भारत में भी *लॉकडाउन* लागू था और परिवहन सेवाएँ जैसे रेल एवं हवाई सेवा अस्थायी रूप से स्थगित की गई थी। यह एक नवीन स्थिति थी जहाँ किसी को कुछ भी नहीं पता था और सब लोग डरे एवं सहमे हुए थे।

25 मई 2020 को भारत सरकार ने हवाई सेवा पुनःआरंभ की और 29 मई 2020 को मैं तिरुवनंतपुरम आ गया। तिरुवनंतपुरम आते ही हवाई अड्डे से ही राज्य सरकार के तत्कालीन नियमानुसार मुझे 14 दिनों के लिए एक होटल में संगरोध (*क्वॉरन्टीन*) कर दिया गया। तदुपरांत मैंने *क्वॉरन्टीन* से बाहर निकलते ही कार्यालय में पदभार ग्रहण किया।

अनन्तपुरी और भयावह *कफ़्यू* जैसा वातावरण

हमारे कार्यालय में राज्य सरकार के कोविड नियंत्रण नीति के अनुसार प्रथम आठ महीने फरवरी 2021 तक क्षेत्रीय लेखापरीक्षा (*फील्ड ऑडिट*) को स्थगित रखा गया था। तिरुवनंतपुरम नगर के सभी *होटल्स* को बंद रखने के आदेश पारित थे एवं बाज़ार और दुकानें एक दिन छोड़ कर और सीमित समय के लिए ही खुलते थे। शहर रात्रि 10 बजे तक शयनावस्था में चला जाता था।

खैर हर काली रात की एक उज्ज्वल सुबह होती है और कुछ इसी प्रकार मार्च 2021 में क्षेत्रीय लेखापरीक्षा दोबारा प्रारंभ की गयी। फील्ड ऑडिट चालू होते ही केरल प्रदेश में मेरी एक बहुत ही महत्वपूर्ण यात्रा भी प्रारंभ हुई।

प्रथम फ़ील्ड ऑडिट (क्षेत्रीय लेखापरीक्षा) :

काक्कनाड एर्णाकुलम में सीखा आत्म-निर्भर होने का पाठ

मार्च 2021 में अपने कार्यालय से मुझे एर्णाकुलम स्थित ट्राको केबल कंपनी पहुँच कर वहाँ चल रहे अनुपालन लेखापरीक्षा में सम्मिलित होने का आदेश प्राप्त हुआ। बस फिर क्या था, मैंने ट्रेन पकड़ी और आलप्पुषा होते हुए एर्णाकुलम स्थित काक्कनाड जा पहुँचा। चूँकि कोविड संक्रमण पर नियंत्रण पाने में देश को कोई खास सफलता नहीं प्राप्त हुई थी फलस्वरूप संक्रमण नियंत्रण हेतु पारित नियम अभी भी लागू ही थे। ऑडिट के दौरान वहाँ निवास हेतु मैंने एक *होम स्टे* बुक किया। *रेस्टोरेंट* एवं *हॉटेलों* के बंद होने के कारण मुझे खुद ही कुछ खाद्य पदार्थों की व्यवस्था करनी पड़ी और *होम स्टे* के चौकीदार से अनुरोध करके मैंने खुद के लिए एक *इन्डक्शन कूक टॉप*, 2 तश्तरी एवं एक कढ़ाई की व्यवस्था की। फिर क्या था रविवार की रात के करीब डेढ़-दो घंटे काक्कनाड में आराम से आधी कच्ची आधी पकी सब्जी और आधी जली रोटियाँ बनाने में व्यतीत किया और फिर अपने ही पकाये हुए खाना खाकर मैं सोने चला गया।

फ़ील्ड में अक्सर अधिकारी अपने सुविधा क्षेत्र से काफी दूर चला जाता है और खुद को नई समस्याओं के बीच में पाता है किन्तु यह निर्भर व्यक्ति पर ही करता है कि वह चुनौती को स्वीकार करता है या उसके सामने अपने घुटने टेक देता है। उस एकांत में मैंने अपने आप के साथ मित्रता कर ली।

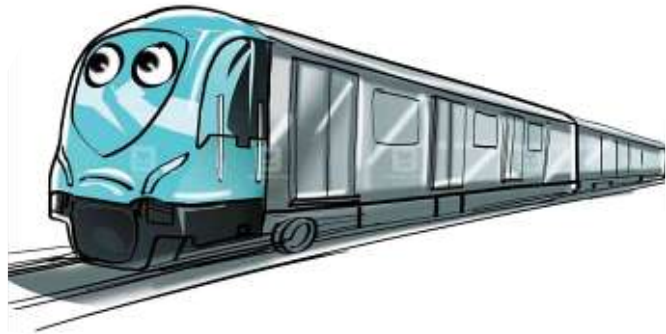
प्रतिदिन *फ़ैक्ट्री* से लौटते हुए शाम के समय मैं पैदल चित्राप्पुषा नदी के पुल को पार करते हुए एक्सप्रेसवे से होते हुए टहलते-टहलते अपने प्रियजनों एवं मित्रों से *फ़ोन* पर बात करते हुए अपने *होम स्टे* पहुँचता था जहाँ मेरा काम खाना-पकाना फिर उसको खाना और फिर सो जाना होता था। अपने घर से कुछ 2600 कि.मी. दूर स्थित एर्णाकुलम के काक्कनाड ने मुझे आत्मनिर्भर होना एवं विपरीत परिस्थिति में भी अनुकूल रहना सिखाया।



मून्नार की सुंदर वादियाँ एवं मनमोहक दृश्य

मून्नार का मलयालम भाषा में अर्थ होता है तीन नदियां। मून्नार को तीन नदियां - मुतिरप्पुषा, नल्लतन्नी और कुंडला के संगम स्थल होने पर यह नाम मिला। ऑडिट करते हुए एक बार मुझे भी मून्नार जाने का आदेश प्राप्त हुआ। फिर क्या था सुबह-सुबह ही मैंने तिरुवनंतपुरम से के.एस.आर.टी.सी की बस पकड़ ली और कोट्टयम से मूवाट्टुप्पुषा होते हुए चाय के बागानों से घिरे हुए स्वर्गतुलनीय मून्नार पहुँच गया। बस में बैठे-बैठे और ना जाने कितने हेयर पिन बैंडों को पार करते हुए सर मानो चकरा सा गया था।

कार्यालय था के.एस.आर.टी.सी का ऑपरेटिंग सेंटर जो की मून्नार का इकलौता बस अड्डा भी हुआ करता था। चारों ओर से खूबसूरत पर्वत शृंखलाओं और चाय के बागानों से घिरे उस कार्यालय में मुझे उत्तराखंड में व्यतीत की हुई सर्दियों के मौसम की याद दिला दी। ऐसी सर्दी मैंने पिछले दो वर्षों में कभी नहीं महसूस की क्योंकि दक्षिण केरल बारहों महीने गर्म ही रहता है। मैंने देखा कि बस अड्डे के बाहर कैसे कुशलतापूर्ण तरीके से पुरानी खटारा बसों को पुनःजीवित करके पर्यटकों के रात में सोने हेतु केप्सूल होटल बनाए गए थे। ऐसा जुगाड़ देख कर मेरा मन आनंदित हो उठा। उसी कार्यालय परिसर में मेरी दोस्ती वेल्ला नामक एक छोटे से श्वेत श्वान से हो गई। वेल्ला देशी नस्ल का एक छोटा लेकिन मजबूत और फुर्तीला कुत्ता था जिसको वहाँ पोस्टेड परिवहन निरीक्षक ने रखवाली के लिए रखा था। कार्यालय से निकलते वक्त लगभग रोजाना वेल्ला मेरे साथ खेलने के लिए नियम से आ जाया करता था।



ईराट्टुपेट्टा और केरलवासियों का फुटबॉल के प्रति स्नेह

मून्नार से तोड़पूषा और तोड़पुषा से वाषाक्कुळम होते हुए अनानास के बागों से गुज़रती सड़कों से उनकी सुगंध में मंत्रमुग्ध होते हुए मैं आदेशानुसार कोट्टयम जिला स्थित ईराट्टुपेट्टा जा पहुँचा। ईराट्टुपेट्टा बस डेपो कार्यालय के अंदर एक बहुत ही सकारात्मक बात देखने को मिली। तो हुआ ऐसा कि कार्यालय में कार्यरत जिला परिवहन अधिकारी से लेकर समूह 'ग' पद तक तैनात सहायक सब ही महिला कर्मचारी थे। भारतीय कार्यक्षेत्र में मौजूद विषम पुरुष-महिला अनुपात के बीच में यह बात जानकर हृदय को थोड़े सुकून की अनुभूति हुई।

शाम को ईराट्टुपेट्टा स्थित अपने होटल में मैं सो रहा था कि अचानक से एक बहुत तेज शोर सुनाई दी और एकाएक मेरी आँखें खुल गईं। शोर सुन मुझे कंपन-सा महसूस हुआ। कहीं यह कोई भूकंप तो नहीं? सहसा अकेला मैं कमरे से बालकनी की ओर भागा। मैंने देखा तो सड़क पर दूर-दूर तक सिर्फ लोगों की भीड़ और हुजूम दिखा। कुछ देर में समझ आया कि दरअसल सारे लोग सड़क के ऊपर लगे बड़े परदे पर प्रसारित हो रहे फुटबॉल खेल के मैच को देखने के लिए इकट्ठा हुए थे। फुटबॉल के प्रति लोगों का यह जुनून देखकर मेरा मन प्रसन्न हो गया।

तलशशेरी दम बिरियानी और लॉर्ड ओवरबरी की भूल

एक बार एक ऑडिट के संबंध में मुझे कन्नूर जिले में तलशशेरी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने केरल में अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से तलशशेरी दम बिरियानी के बारे में काफी कुछ सुना था। इस दम बिरियानी की शुरुआत ही तलशशेरी स्थित *पेरिस होटल* से हुई थी। तत्कालीन समय में तलशशेरी दम बिरियानी ने भारत की प्रसिद्ध बिरियानियों में अपना भी नाम शुमार कर चुकी है एवं एक अलग पहचान बना ली है।

इसको ध्यान में रखते हुए मैंने होटल *पेरिस प्रेज़िडन्सी* में निवास करने का मन बनाया और कमरा बुक किया। इस होटल की एक खास बात थी कि एक समय पर *पेरिस प्रेज़िडन्सी होटल* में केरल राज्य के चयनित जन प्रतिनिधि एवं मुख्यमंत्री और उनके अधिकारीगण निवास किया करते थे। इस होटल की एक अलग ही ऐतिहासिक पहचान है।

पेरिस होटल अंदर से काफी शानदार एवं आलीशान था और वहाँ वर्ष 1970-80 के दशक की एक झलक देखने को मिलती थी।

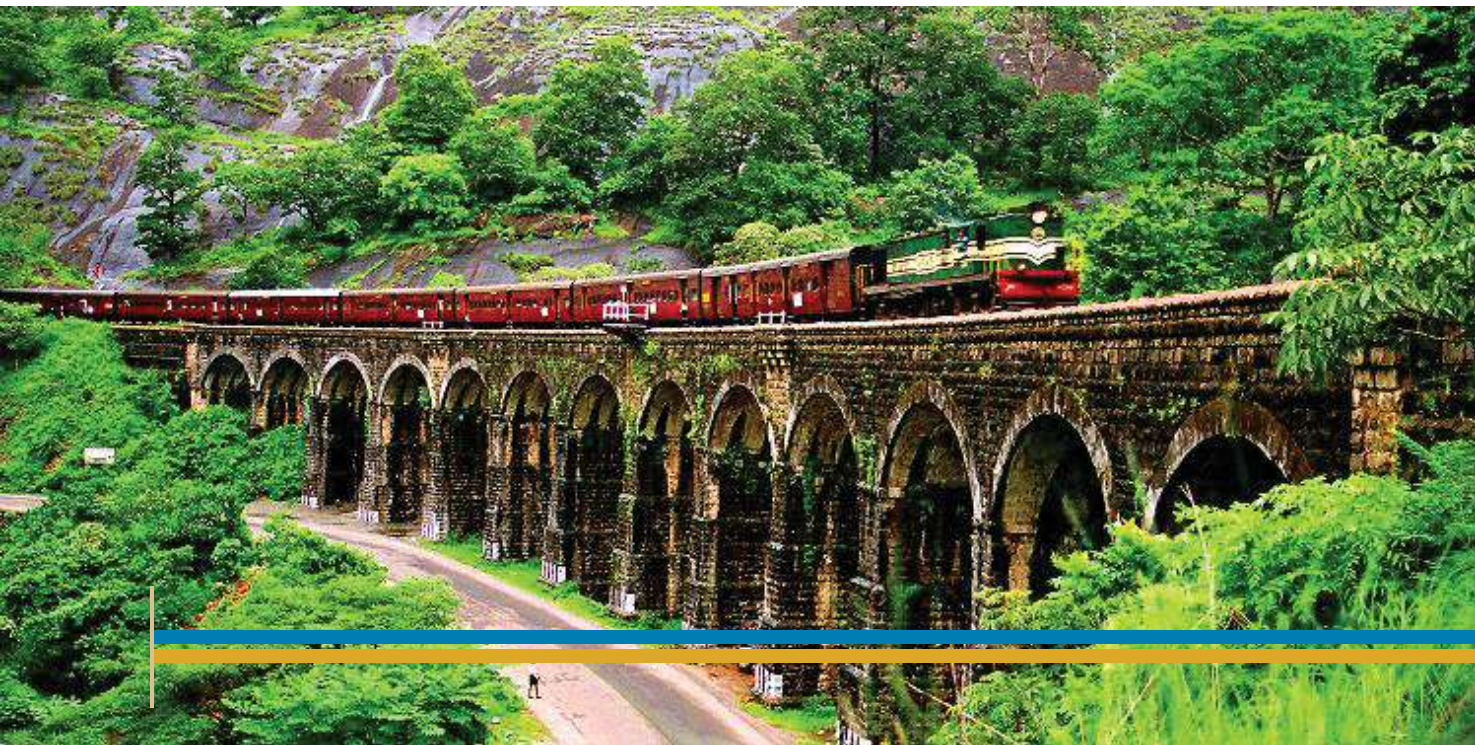
प्रातः काल उठकर मैं सैर करने निकला और टहलते हुए *ओवरबरी फोली* नामक एक *पार्क* में पहुँच गया। नाम थोड़ा विचित्र लगा और ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद इस उपवन का संबंध एक समय में भारत में स्थापित अंग्रेजी साम्राज्य से जरूर होगा। तो किस्सा पता चला कि ओवरबरी साहब जो कि एक न्यायमूर्ति भी थे। वर्ष 1879 में तलाशेरी में समुद्र किनारे चट्टान पर पिकनिक के लिए एक पार्क बनाना चाहते थे किन्तु कुछ कारणवश उनका यह सपना अधूरा रह गया। वर्षों के बाद राज्य सरकार ने उनके इस अधूरे सपने को पूरा किया और तब अस्तित्व में आया यह उपवन जिसका नाम रखा गया ओवरबरी फोली जिसका शाब्दिक अर्थ हुआ ओवरबरी की भूल। हालांकि मेरे अनुसार यह कहना कि अधूरा काम किसी की भूल होती है काफी हद तक हमें एक गलत संदेश प्रेषित करता है क्योंकि मैं मानता हूँ कि काम शुरू करना भी अपने आप में एक बहुत ही हिम्मत वाला कार्य है।

वैसे ओवरबरी फोली एक काफी सुंदर उपवन है जो कि सागर किनारे स्थित है। वहाँ टहलते हुए मेरी मुलाकात एक विवाहित युगल से हुई जो कि अपने दो छोटी-छोटी बेटियों के साथ घूमने आए थे। उन महिला के मुख से हिंदी सुनकर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह उत्तर भारत से हो और मैंने ऐसे ही उन दोनों से बात शुरू कि तो पता चला कि वह महिला पंजाब से हैं और उनके पति केरल से। दोनों उत्तर प्रदेश के वाराणसी में निवास करते हैं। गर्मी की छुट्टियों के चलते वे अपने बच्चों को उनके दादा एवं दादी से मिलवाने आए हुए हैं। उन दोनों से मिलकर मैं रोमांचित सा हो उठा। मैंने पूछा कि भिन्न भाषा एवं संस्कृति के वजह से कोई परेशानी तो नहीं आती है जिसपर उस महिला ने मुझे बताया कि ऐसी कोई परेशानी नहीं है बस यह है कि उनके बच्चे तीन भाषा बोलते हैं जो कि पंजाबी, हिंदी एवं मलयालम है। मैंने शीघ्रता से कहा कि यह परेशानी नहीं ईश्वर की कृपा है और आपकी दोनों ही बेटियाँ जल्द ही पूरे विश्व को अपना घर बना लेंगी।



तलशशेरी से निकलने से पहले मैं पेरिस होटल में दम बिरियानी खाने गया। *पेरिस होटल* बहुत पुराना था और पता चला कि वर्ष 1942 में इसकी स्थापना श्री एम के मुहम्मद जी ने की थी। दम बिरियानी खाने में जो आनंद आया वो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता बस इतना समझ लीजिए की *वास्को डा गामा* यूँ ही केरल नहीं आए होंगे। उत्तम अनुपात में मसाले जिन्होंने चावलों को सुगंधित कर दिया था, लंबे समय तक पकने के बाद नरम हुए गोश्त के वो टुकड़े उस दम बिरियानी को बिरियानी से ज्यादा एक अद्भुत अनुभव बना चुके थे। बिरियानी खाकर मैंने अपने तलशशेरी की यात्रा को समाप्त किया और अपने मुख्यालय तिरुवनंतपुरम के लिए रवाना हुआ।

मेरी केरल यात्रा काफी लंबी है और अभी भी चल ही रही है। उपरोक्त किस्से तो इस यात्रा के एक कण से भी छोटा अंश है। इसी के साथ मैं अपने कलम को विश्राम देता हूँ तथा आप सभी पाठकों को इस लेख को पढ़ने के लिए धन्यवाद करता हूँ। आशा करता हूँ कि अगले अंक में अपनी केरल यात्रा के नये अंश सम्मिलित कर पाऊँगा।



वर्ष 2019-2021 की अवधि के लिए, राजस्व क्षेत्र – केरला सरकार पर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की वर्ष 2022 की रिपोर्ट –सं.6 का सार

वर्ष 2019-2021 की अवधि के लिए, राजस्व क्षेत्र - केरला सरकार पर भारत के नियंत्रक - महालेखापरीक्षक की संयुक्त अनुपालन लेखापरीक्षा रिपोर्ट, भारत के संविधान के अनुच्छेद 151 के तहत केरल के राज्यपाल को प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गयी है ताकि राज्य विधान-सभा के समक्ष प्रस्तुत की जा सके। इस रिपोर्ट में केरला सरकार के राजस्व क्षेत्र के तहत आने वाले विभागों, जिसमें राज्य माल एवं सेवा कर विभाग, आबकारी विभाग तथा पंजीकरण विभाग शामिल हैं, की अनुपालन लेखापरीक्षा के प्रमुख परिणाम अंतर्विष्ट है। यह रिपोर्ट 09 फरवरी 2023 को केरला राज्य विधान सभा के समक्ष प्रस्तुत की गयी।

इस रिपोर्ट में उल्लिखित मामले, वे हैं जो वर्ष 2019-2020 तथा 2020-2021 से संबंधित अभिलेखों की नमूना लेखापरीक्षा दौरान ध्यान में आए, और वे भी हैं जो पूर्व वर्षों में ध्यान में आए तो थे लेकिन पिछली रिपोर्टों में समाविष्ट नहीं किए जा सके। जहाँ आवश्यक लगे, वर्ष 2020-2021 के बाद की अवधि के मामले भी शामिल किए हैं।

भारत के नियंत्रक - महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षण मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा आयोजित की गयी।

इस रिपोर्ट में एक अनुपालन लेखापरीक्षा रिपोर्ट सहित उन्नीस पैराएं शामिल हैं जो ₹66.76 करोड़ के राजस्व प्रभाव को समाविष्ट करते हैं। महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा टिप्पणियां नीचे दी गयी है :

I. सामान्य

पूर्व वर्षों यानिकि वर्ष 2019-2020 तथा 2018-19 के लिए क्रमशः ₹90, 224.67 करोड़ तथा ₹92, 854.48 करोड़ की तुलना में वर्ष 2020-2021 के लिए राज्य सरकार की कुल राजस्व प्राप्तियां ₹97, 616.83 करोड़ राशि की थी। राज्य का अपना राजस्व ₹54, 988.15 (कुल प्राप्तियों का 56 प्रतिशत) का था; भारत सरकार की प्राप्तियों का शेयर ₹42, 628.68 करोड़ (कुल प्राप्तियों का 44 प्रतिशत) था।

राजस्व के कुछ प्रधान शीर्षों पर राजस्व की बकाया राशि ₹21,797.86 करोड़ थी जिसमें से ₹7,100.32 करोड़ पांच वर्षों से अधिक बकाए रहे थे।

जून 2020 के अंत में, दिसंबर 2019 तक जारी 2,236 निरीक्षण रिपोर्टों से संबंधित ₹4,117.68 करोड़ समाविष्ट करनेवाले 14,713 पैराग्राफ बकाए थे और जून 2021 के अंत में दिसंबर 2020 तक जारी 2,275 निरीक्षण रिपोर्टों से संबंधित ₹4,412.44 करोड़ समाविष्ट करनेवाले 14,654 पैराग्राफ बकाए थे।

II. बिक्री, व्यापार आदि पर वस्तु एवं सेवा कर कर मूल्यवर्धित कर

‘वस्तु एवं सेवा कर के तहत संक्रमणकालीन साख’ पर अनुपालन लेखापरीक्षा

94 मामलों में से 27 (28.72 प्रतिशत) में योग्यता मानदण्ड पूरा न होने के बावजूद शुल्क भुगतान दस्तावेजों सहित स्टॉक के मालों पर ₹6.25 करोड़ के संक्रमणकालीन साख का अनियमित दावा।

203 मामलों में से 6 (2.96 प्रतिशत) में योग्यता मानदण्ड पूरा न होने के कारण शुल्क भुगतान दस्तावेजों रहित स्टॉक के मालों पर ₹2.89 करोड़ के संक्रमणकालीन साख का अनियमित दावा।

867 करदाताओं में से 19 की फाईल की गयी पिछली केवीएटी विवरणी में साख के अंत शेष का मेल नहीं खाने के कारण ₹0.63 करोड़ के इनपुट कर साख अधिक अग्रणीत हुआ।

‘जीएसटी के तहत प्रतिदाय दावों का संसाधन’

जांच किए चुनिंदा कर जिलाओं में 796 मामलों में से 276 मामलों (34.67 प्रतिशत) में प्रतिदायों की मंजूरी में एक से 628 दिनों तक की श्रेणी में विलंब हुआ था।

1,922 प्रतिदाय आदेशों में से 1,592 (82.83 प्रतिशत) में समतुल्य कर प्राधिकरण को प्रतिदाय आदेश की सूचना देने में एक से 311 दिनों तक की श्रेणी में विलंब हुआ था।

364 प्रतिदाय मामलों में से तीन में उच्चतर दर पर अनुमत शुल्क वापसी के बावजूद ₹0.15 करोड़ के आईजीएसटी तथा सीजीएसटी प्रतिदाय की अनियमित अनुमति।

364 प्रतिदाय मामलों में से एक में साख टिप्पणियों को न निकालने की चूक के कारण ₹0.14 करोड़ के अधिक प्रतिदाय की अनुमति।

कर की अल्प उगाही

आठ निर्माण संविदा मंडल कार्यालयों से संबंधित 36 कर निर्धारितियों के संबंध में ₹ 374.59 करोड़ के कुल आय पर गलत कर दर लागू करने के परिणामस्वरूप ₹18.57 करोड़ के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

दो निर्माण संविदा मंडल कार्यालयों से संबंधित दो कर निर्धारितियों के संबंध में छूट हेतु अयोग्य दावा / योग्य घटक पर अधिक दावा, ₹11.09 करोड़ के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही में परिणत हुआ।

चार राज्य कर कार्यालयों के पत्रक में पंजीकृत पांच कर निर्धारितियों के संबंध में निर्धारणकर्ता प्राधिकारियों द्वारा किए गए गलत निर्धारण के परिणामस्वरूप ₹7 करोड़ के कर एवं ब्याज की अल्प उगाही हुई।

III. अन्य कर प्राप्तियां

निदेशक बोर्ड के अप्राधिकृत पुनर्गठन के लिए जुर्माना न लगाने के कारण तथा पुनर्गठन के नियमितीकरण के लिए शुल्क के गैर-संग्रहण के कारण 17 कंपनियों से ₹ 0.88 करोड़ के राजस्व की गैर-वसूली हुई।

दो मामलों में विभाग द्वारा विदेशी शराब लाइसेंसों के अनियमित अंतरण के कारण ₹0.26 करोड़ की राजस्व हानि।

सीपीडब्ल्यूडी द्वारा निर्धारित मूल्यांकन मानदण्ड न अपनाने के परिणामस्वरूप ₹1.51 करोड़ की राशि के स्टॉप शुल्क एवं पंजीकरण शुल्क की अल्प उगाही हुई।



श्री निपिन प्रकाश
वरिष्ठ लेखक/परीक्षक

मैसूर की यात्रा

मैसूर, भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित एक खूबसूरत शहर है जो अपनी प्राचीन संस्कृति, शानदार विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। यह एक ऐतिहासिक शहर है जो राजाओं के राजदरबारों की यादें समेटे हुए हैं और इसके सुंदर वन्य जीवन से भरे नैचुरल लैंडस्केप को देखने का आनंद लेने के लिए यहाँ के पर्यटक खासतौर से आते हैं।

मैसूर के प्रमुख आकर्षणों में से एक है – “मैसूर पैलेस”। यह पैलेस राजमहलों का एक अद्भुत नमूना है और इसकी आकर्षक वास्तुकला और सुंदर उद्यान दर्शकों को मोह लेते हैं। जब इसे रात में रोशनी से सजाया जाता है, तो यह खूबसूरत दृश्य देखने योग्य होता है।

दूसरा प्रमुख स्थान “चामुंडी पहाड़ी” है जहाँ ट्रेकिंग के शौकीन लोग जाते हैं। इस पहाड़ी में माँ चामुंडेश्वरी का मंदिर है जो देवी दुर्गा को समर्पित है। यहाँ से ऊँचाइयों से घिरा हुआ नज़ारा देखकर आत्मा को शांति मिलती है और यहाँ से आप पूरे शहर को देख सकते हैं।

मैसूर की बाजारें भी इसकी विशेषता में एक बड़ा हिस्सा हैं। देवराज मार्केट एक प्रसिद्ध बाजार है जहाँ आप भारतीय सामानों, स्थानीय कला-क्राफ्ट उत्पादों, पुरानी किताबों और प्राचीन वस्त्रों की खरीदारी कर सकते हैं।

मैसूर के पास बृंदावन उद्यान भी है जहाँ आप प्राकृतिक खूबसूरती का आनंद ले सकते हैं। इस उद्यान में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों के बीच में घूमने से मन को शांति मिलती है और प्राकृतिक ताज़गी का अनुभव होता है।

मैसूर की स्थानीय संस्कृति भी बड़ी ही दिलचस्प है। यहाँ के लोग अपनी विरासत में प्रचलित सांस्कृतिक गतिविधियों- नृत्य और संगीत के माध्यम से अपनी परंपराओं को जीवंत रखते हैं। आप मैसूर के किसी स्थानीय उत्सव या मेले को भी देखने जा सकते हैं जो वर्षा ऋतु में विशेष रूप से आयोजित होते हैं।

यात्रा के दौरान आप मैसूर के स्थानीय स्वादिष्ट पकवान का लुत्फ़ उठा सकते हैं। डोसा, इटली, बड़ा, मसाला डोसा आदि मैसूर के प्रसिद्ध व्यंजन हैं जो आपके चहेते हो सकते हैं।

इस प्रकार, यात्रा स्थल के लिए मैसूर बेहद ही रोमांच से भरा प्राकृतिक स्थल है जो आपको भारतीय संस्कृति, विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत अनुभव करने का मौका देता है। इस यात्रा से आपके जीवन को यादगार अनुभव अपनाने का मौका मिलता है। इस यात्रा से आपके जीवन में एक यादगार अनुभव के साथ-साथ नई प्रेरणा और ऊर्जा का संचार होगा।



भ्रमणीय स्थल

1. मैसूर पैलेस: मैसूर राजा का आधिकारिक निवास स्थान था जो विजयनगर शैली में निर्मित है। इसके अभिप्रेरित अंदरूनी आकार, सुंदर मार्बल बोटों और विभिन्न शैलियों के स्थलों की सौंदर्यता से आज भी यह आश्चर्यजनक है।
2. बृंदावन गार्डन: यह एक रमणीय गार्डन है जो मैसूर के बगीचों में से एक है। यहाँ घूमने से आपको प्रकृति के साथ समय व्यतीत करने का आनंद मिलेगा।
3. चामुंडेश्वरी देवी मंदिर: यह श्री चामुंडेश्वरी देवी को समर्पित है और पर्वत के शीर्ष पर स्थित है। यहाँ से आप शहर की ऊँचाईयों का आनंद ले सकते हैं और प्राकृतिक सौंदर्य को देखने का आनंद कर सकते हैं।
4. सोमनाथ मंदिर: यह विश्वविख्यात विशाल मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर की दीवारें पर दिखाई देने वाली विस्मयजनक वास्तुकला आपको मंत्रमुग्ध कर देगी।
5. बृंदावन जागीर डॉक: यह अपारदर्शी बाजार खुदाई डॉक में स्थित है और विश्वसनीय आइटम खरीदने के लिए बेहतर स्थान है।

विभिन्न पहलुओं को देखेंगे जो मैसूर को एक आकर्षक स्थान बनाते हैं

1. **मैसूर का परिचय:** मैसूर जिसे मैसूर भी कहा जाता है, चामुण्डी पहाड़ियों के नीचे स्थित है, बेंगलूर के लगभग 145 किलोमीटर दक्षिण - पश्चिम में स्थित है। कर्नाटक में तीसरा सबसे बड़ा शहर है और विश्व में कला, संस्कृति और संपत्ति का प्रमुख केंद्र रहा है।
2. **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:** मैसूर बीते युग में कई प्रभावशाली साम्राज्यों के लिए राजधानी शहर रहा है। अतीत में जाने पर मिलता है कि 9^{वीं} और 10^{वीं} सदी में गंगा राजवंश ने शासन किया किया था। बाद में चोल, होयसल और विजयनगर साम्राज्य ने भी शहर की संस्कृति के विकास में अपना योगदान दिया। हालांकि मैसूर का स्वर्णिम काल 14^{वीं} सदी में वडियार राजवंश के शासन काल के दौरान प्रारंभ हुआ जो शहर की समृद्धि और ख्याति का कारण बना।
3. **वडियार राजवंश और मैसूर राज्य:** वडियारों के राज्य के कई शताब्दियों तक का शासन मैसूर पर रहा और उन्होंने शहर के सांस्कृतिक और वास्तुकला विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रसिद्ध मैसूर महल जो भारतीय सराकेनिक वास्तुकला का उद्कृष्ट उदाहरण है उनके शासन काल में निर्मित हुआ था और मैसूर की भव्यता का प्रतीक बन गया।



4. **कला और संस्कृति में मैसूर का योगदान:** मैसूर सदियों से शास्त्रीय संगीत, नृत्य और साहित्य के लिए प्रसिद्ध केंद्र रहा है। वार्षिक मैसूर दशहरा उत्सव, दस दिनों का धार्मिक उत्सव, शहर की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित करता है जो दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है।
5. **मैसूर की वास्तुकला:** मैसूर की वास्तुकला विभिन्न शैलियों का मिश्रण दिखाती है जिसमें द्रविड़, भारतीय सराकेनिक और इस्लामी शैलियां शामिल हैं। मैसूर महल के अलावा शहर में अन्य कई वास्तुकला के अद्भुत नमूने हैं जैसे कि जगनमोहन महल, ललित महल और सेंट फिलोमिना का चर्च।
6. **टिपू सुल्तान की विरासत:** टिपू सुल्तान मैसूर के शेर, एक बहादुर शासक थे जिन्होंने दक्षिण भारत में ब्रिटिश विस्तारण का सख्त सामर्थ्य से सामना किया था। उनके शहर के विकास, किलेबंदी और तकनीकी प्रगति के योगदान को गर्व से याद किया जाता है।
7. **धर्म और आध्यात्मिकता मैसूर में:** मैसूर में कई मंदिर, मस्जिद, चर्च और अन्य धार्मिक संरचनाएं हैं। चामुण्डेश्वरी मंदिर चामुण्डी पहाड़ियों के शिखर पर स्थित है जो एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल और लोकप्रिय तीर्थ स्थान है।
8. **मैसूर शिक्षा का केंद्र:** प्राचीन काल से मैसूर शिक्षा का केंद्र रहा है। यहाँ पर्याप्त संख्या में प्रसिद्ध संस्थान जैसे कि मैसूर विश्वविद्यालय, केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सीएफटीआरआई) और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग (एनआईई) स्थित है।
9. **मैसूर की पारंपरिक शिल्पकला:** मैसूर को उत्कृष्ट रेशमी साड़ियों के लिए भी जाना जाता है जिन्हें मैसूर सिल्क साड़ियाँ भी कहा जाता है। रेशमी बुनाई उद्योग मैसूर की विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है जो रोजगार प्रदान करता है और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।
10. **मैसूर के स्वादिष्ट भोजन:** खाने के शौकीन लोग मैसूर में जाकर खाने का आनंद उठा सकते हैं। यहाँ के लोकप्रिय व्यंजनों में डोसा, इडली और अद्भुत मैसूर पाक शामिल है।
11. **बगीचे और पार्क:** मैसूर में कई सुंदर बगीचे और पार्क हैं जो इसकी खूबसूरती को बढ़ाते हैं। वृंदावन बगीचे, कृष्ण राजा सागर बांध के निकट स्थित संगीतीय फव्वारों और प्रकाशित नृत्य के जल बौद्धारों के साथ एक महान दृश्य है।
12. **प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीवन:** मैसूर के आस पास के क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य और जैविक विविधता से भरपूर है। बंदिपुर राष्ट्रीय उद्यान और नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान वन्यजीवन संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के उदाहरण हैं।
13. **त्योहार और उत्सव:** मैसूर विभिन्न त्योहारों का धूमधाम से समारोह का आयोजन करता है जिसमें दसरा, उगादी और दिवाली शामिल हैं। प्रत्येक उत्सव अद्भुत रीति-रिवाज, परंपराएं और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ मनाया जाता है।



14. **मैसूर की समकालीनता:** जैसाकि हम आधुनिक युग में प्रवेश करते हैं, मैसूर ने तेजी से शहरीकरण और भौतिक विकास को देखा है। शहर ने आधुनिकता को ग्रहण किया है, साथ ही अपने समृद्ध विरासत को संरक्षित करने का प्रयास किया है।
15. **पर्यटन और पर्यटक आकर्षण:** मैसूर पर्यटकों को अपने समृद्ध इतिहास, भारतीय संस्कृति के विविधता और वास्तुकला के चमत्कार से आकर्षित करता है। पर्यटक मैसूर महल, मैसूर चिड़ियाघर और चामुण्डी पहाड़ियों जैसे आकर्षक स्थलों का आनंद लेते हैं।
16. **चुनौतियाँ और भविष्य की आशाएं:** किसी भी शहर की तरह मैसूर को सतत समृद्धि, पर्यावरणीय संरक्षण और भौतिक विकास के कई चुनौतियों का सामना करना होता है। शहर के भविष्य की आशाएं आधुनिकता और विरासत संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने में हैं।

निष्कर्ष

मैसूर अपने इतिहास, विविध संस्कृति और वास्तुकला के साथ भारत की जीवंत धरोहर का प्रतीक है। मैसूर महल से लेकर चामुण्डी पहाड़ियों तक शहर आज भी विश्वास योग्यता और जड़ों से जुड़े रहने की क्षमता के साथ मोहित करता है। जैसे ही यह विकसित होता है, मैसूर भारत के समृद्ध भूतकाल और उज्ज्वल भविष्य के एक प्रलेखनी बनता रहता है। इस शहर के प्रसिद्ध स्थलों की यात्रा एक अद्भुत अनुभव है और पर्यटक यहाँ के शौर्यपूर्ण इतिहास का आनंद लेते हैं। आपको मैसूर के प्राचीन संस्कृति, साहसिक कला और प्राकृतिक सौंदर्य से मोहित कर देगा। इसलिए अगली बार जब आप यात्रा करने की योजना बनाएं मैसूर को एक प्रमुख स्थल के विकल्प के रूप में विचार करें और इस सुंदर शहर की सैर करने का आनंद लें।

कल्याणकारी गतिविधियां

फिसियोथेरापी एवं आयुर्वेद शिविर

हमारे कार्यालय के ओआरओपी हॉल में एस.के. हॉस्पिटल द्वारा 360 स्पाइनल वेलनस एंड रिहाबिलिटेशन (रॉयल मेडिकल सेंटर) के सहयोग से एक फिसियोथेरापी एवं आयुर्वेद शिविर आयोजित किया गया था। लेखापरीक्षा भवन के निचले तल के लेक्चर हॉल में दिव्यांगों के लिए अलग से व्यवस्था की गयी थी। रोगी परीक्षण टेबल, पैरामेडिक्स के लिए भोजन और जलपान सहित सभी सुविधाओं की व्यवस्था सामान्य अनुभाग तथा कल्याण अनुभाग द्वारा की गयी थी। शिविर के लिए एक आयुर्वेद चिकित्सक और छः पैरा मेडिकल कर्मियों को अस्पताल द्वारा प्रदान किया गया था। शिविर सुबह 10 बजे से शाम 5.15 बजे तक चला। कार्यालय के अधिकारी / कर्मचारीगण द्वारा इस शिविर का लाभ उठाया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

मुख्यालय कार्यालय के आदेशानुसार 21^{वीं} जून को नौवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया था। श्री जयकृष्णन, योग प्रशिक्षक को इस कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया था। ओआरओपी हॉल में श्री दिनकरन, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के प्रारंभिक भाषण के साथ शाम चार बजे कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। श्री पी.के. लालु, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन – लेखापरीक्षा-I) भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। लेखापरीक्षा-I, लेखापरीक्षा-II तथा लेखा एवं हकदारी कार्यालयों से कर्मचारी सदस्यों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया और योग प्रशिक्षक के निदेशों पर विविध योग आसन किये। शाम 5.15 तक कार्यक्रम चलता रहा। श्री जे.ए. साईकुमार, कल्याण सहायक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आधार बयोमेट्रिक अद्यतन शिविर

अक्षया स्टेट प्रोजेक्ट ऑफिस के माध्यम से ओआरओपी हॉल में 27 व 28 जून 2023 को दो दिवसीय आधार बयोमेट्रिक अद्यतन शिविर आयोजित किया गया था। शिविर सुबह दस बजे शुरू हुआ था। लेखापरीक्षा-I, लेखापरीक्षा-II तथा लेखा एवं हकदारी कार्यालयों से कर्मचारी सदस्यों ने इस अद्यतन शिविर में भाग लिए और आसानी से अपने आधार अद्यतन संबंधी कार्य को पूरा किया। यद्यपि शिविर चार बजे तक ही निर्धारित था, लेकिन दूसरे दिन पांच बजे तक बढ़ाया गया था।







सुश्री मैथिली जे आर
सुपुत्री राखी पी ओ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वो मुस्कान



उसने जो मुस्कान दी, वह मुझे अब भी याद है
उनकी वह अठखेलियां जिनके लिए आज भी तरसती हूँ
उनकी मुस्कान जिसे देख शर्म से भर जाती हूँ
जब वह मुस्कुराये तो यूँ मानो वक्त थम जाये
देखूँ तो देखती ही रह जाऊँ
इतनी उजली कि मेरे दिन को सूरज की लाली बना दे
बोलो मेरे जैसा भाग्य किसके पास जिसमें ऐसी मुस्कान है ?
मेरी दुआ है वो हरदम यूँ ही मुस्कुराते रहें
युगों तक मुझे उस गूँजती हँसी का आलिंगन मिलता रहे
वो जब भी हँसे फिर यही याद आए-
मैं तेरे प्यार में खोई हूँ फिर भी तू मेरी अधूरी ख्वाहिश है



श्री प्रवीण कुमार
लेखापरीक्षक

तक्रदीर और तदबीर

तक्रदीर

यह तदबीर से बोली तक्रदीर हँसकर-
नहीं कोई दुनिया में मेरे बराबर ।

मैं दम भर में जो चाहूँ करके दिखा दूँ,
भिखारी को राजों का राजायों बना दूँ ।

करम-रेख कहते हैं मुझको जहाँ में,
ज़रा सोच जी में, कहाँ तू कहाँ मैं ?

मुझे अपने सिर पर जगह सबने दी है,
मेरे हाथ में सबकी नेकी-बदी है ।

मैं बनती हूँ तो काम बनते हैं सारे,
मैं बिगड़ूँ तो है कौन जो कुछ सँवारे ?

चमकते हैं जो आसमाँ पर सितारे,
फिरूँ मैं तो दम भर में फिर जाएँ सारे ।

मैं मारूँ तो है कौन जो आ बचाए
बचाऊँ तो ताकत किसे जो सताए ।

जो बदलूँ बदल जाए सारा जमाना
करे बैर की बात अपना बिगाना ।

न करती जो मैं राज दुनिया में आकर,
तो हो जाते छोटे-बड़े सब बराबर ।

जहाँ में मेरी बात सबसे बड़ी है,
मेरी चाह हर एक को हर घड़ी है ।

है कोई ऐसा मुझे जो न माने,
मेरे भेद को आदमी कैसे जानें ।

मेरे सामने तेरी है क्या हकीकत ?
बता गर तू रखती है कोई करामत ।



तदबीर

यह बात सुन तदबीर भी हँसके बोली,
झड़े फूल मुहँ से ज़बाँ जब कि खोल-

बहन, जो कहा तुमने सब वह सही है,
बड़ाई मगर तुमको मुझसे मिली है।

करम-रेख हो तुम यह मैं जानती हूँ,
तुम्हारे गुणों को मैं पहचानती हूँ।

मैं मददगार हूँ और सहारा
न मुझ बिन चले काम कोई तुम्हारा।

मेरी चाल होती है सबसे निराली,
नहीं है मेरी बात मतलब से खाली।

जहाँ में जो रौनक नजर आ रही है,
मेरी ही करामात दिखला रही है।

जमीं मैंने जोती, फसल मैंने बोई,
न होता अगर नाज जीता न कोई।

ये सब बाग मेवों के मैंने लगाए,
मजेदार मीठे फल सभी चखाए।

यह फूलों की क्यारी जो लहरा रही है,
मेरी रंगते सबको दिखला रही है।

जो कपड़े हैं यहाँ रेशमी और ज़रीके,
नमूने हैं सब मेरी कारीगरी के।

हकीमों को मैं ही बताती हूँ हिकमत,
भरी हैं कलों में मेरी ही करामत।

मैं लोहे को देती हूँ सोने की कीमत,
मेरा हाथ लगने से खुलती है किस्मत।

जहाँ में जो है आदमी ने बनाया,
वह सब मेरी हिकमत ने जलवा दिखाया।

जो इक तख्त ताऊस तुमने सुना है,
वह मेरी ही कारीगरी से बना है।

जो है ताज़-बीबी का रोज़ा अनोखा,
बनाया हैं मैंने, नहीं इसमें धोखा।

जो चाहूँ अभी आग को खाक कर दूँ,
लगा हाथ नापाक को पाक कर दूँ।

सिखाऊँ वह कारीगरी आदमी को,
अचंभा जिसे देख हो हर किसी को।

जरा देख तू रेल के तार ही को,
मिले इनसे आराम कितना सभी को।

‘एयरशिप’ है वह चीज भरकर,
कि उड़ने लगे आदमी उसमें बेपर।

तेरी बात को भी मगर मानती हूँ,
मैं अच्छी तरह तुझको पहचानती हूँ।

मेरे काम सब हैं तेरे आसरे पर,
बिना मेरे हैं तेरे सब काम अबतर।

जो मैं और तू साथ हो तो मज़ा हो,
मिलें जिसको दोनों वह सबसे बड़ा हो।



कांच की चूड़ियां

श्रीमती राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

मुन्नी को कांच की चूड़ियों का बड़ा शौक था। रंग-बिरंगी चूड़ियां...उसके साथ हंसती-खेलती खनकती चूड़ियां..... लेकिन क्या करें उसकी नन्हीं सी कलाई के लिए सही चूड़ियां कहीं नहीं मिली और कभी नहीं मिली। बेचारी मुन्नी.... बाबा अम्मा ने कहा कि कोई बात नहीं... जब तू बड़ी हो जाएगी खूब सारी चूड़ियां दिला देंगे बेचारी मुन्नी जल्दी-जल्दी बड़ी होना चाहती थी हमेशा सोने से पहले भगवान से विनती करती.... मुझे जल्दी से बड़ी बनाओ....मुझे ढेर सारी चूड़ियां पहननी है..... लगता है रोज-रोज की उसकी प्रार्थना सुनकर भगवान थक गए और उन्होंने उसको जल्दी-जल्दी में बड़ा कर दिया लेकिन उनसे भूल हुई उन्होंने सिर्फ उसका शरीर ही बड़ा कर दिया था, दिल से और दीमाग से वह मुन्नी की मुन्नी ही रही।

उसके बाबा-अम्मा और आस-पड़ोस के लोग कहने लगे... अरे मुन्नी तो बड़ी हो गयी...उसके हाथ जल्दी पीले कराना होगा... 'अरे हाथ पीले कराना !!! वो कैसे...तुम लोगों ने कहा था कि मुझे चूड़ियां दिला देंगे....यह पीले कराने की बात कहां से आ गयी' मुन्नी असमंजस में पड़ गयी। एक दिन उसको संवार कर, सजाकर साड़ी पहना दी गयी ... साड़ी पहनकर वह बहुत खुश हो गयी.... यही है शायद हाथ पीले कराना...अब तो मुझे चूड़ियां मिलेगी ... लेकिन उसे चूड़ियां मिल गयी लेकिन सोने की ... कुछ उसकी मां की पुरानी और कुछ जो उसके बाबा कहीं से लेकर आए थे.... उसका दिल बैठ गया और वो रोने लगी ... उसको तो कांच की चूड़ियां चाहिए थी। लोगों ने सोचा उसको घर छोड़कर जाने का दुख है। एक तो चूड़ियां भी नहीं मिली ऊपर से किसी मूँछवाले के साथ जाना भी है...मुन्नी हताश होकर आहें भरती रही। नए घर जाकर वह मायूस सी बैठी रही... रात को जब मूँछवाले ने उसको हल्के से मुस्कुराकर पास बुलाया तो उसने हिम्मत ठानी और कहा कि मुझे लाल रंगी की चूड़ियां चाहिए... उस दिन आखिरी बार उसने मूँछवाले को हंसते हुए देखा था....

बाद में मूँछवाले ने एक-एक करके उसकी सारी सोने की चूड़ियां लेकर गए और कभी वापस लेकर नहीं आए। उसे कोई फर्क नहीं पड़ा...उसे तो कांच की चूड़ियां चाहिए थीं... लेकिन उसके हाथ तो कभी चूड़ियों से नहीं भरे लेकिन उसकी छोटी-सी आंखें हमेशा भरी की भरी ही रह जाती थी। मूँछवाले ने उसकी मूँछों पर ताव देकर उसको डराया, जब भी

चूड़ीवाला आता वह आंखें दिखाकर फटकार कर उसको अंदर भगाता। उसकी चेहरे की हंसी तो बेचारी मुन्नी के जीवन की सारे रंगत उतर गयी। वह एकदम चुप हो गयी। उसकी चेहरे की हंसी तो हमेशा के लिए उसे छोड़कर चली गयी थी। वह अपनी छोटी-छोटी इच्छाएं – अभिलाषाएं भूल गयी... और पिजंडे की पंछी बन गयी थी। मुँह उठाकर बात तो क्या वह खुलकर रोने की भी हिम्मत नहीं थी उसमें। एक रात मूँछवाला हमेशा की तरह चार पैरों पर नहीं लौटे थे बल्कि कफन बांधकर उसको घर लाया गया था।

सब लोग दुखी थे कि बेचारा मूँछवाला....यह कोई उम्र है जाने का.... कितना अच्छा आदमी था...कितना नेक इंसान था... सब लोग मुन्नी को तरस भरी आंखों से देखने लगे। सब उसको सांत्वना दे रहे थे और उसकी फूटी किसमत पर आंसू बहा रहे थे। लेकिन मुन्नी को तो यह सब बिलकुल छू नहीं रहा था उसे तो ऐसा लग रहा था कि वह बेवजह की कैद से रिहा हो गयी जैसे उसके हाथ के बंधन खुल गए मूँछवाले की चिता को आग लगाने से पहले ही किसी ने उसके सामने सफेद पोशाक रख दिए और कहा कि उसे अभी से इन्हीं सफेद कपड़ों में जीवन बिताना है। उसके जीवन में अब रंगों के लिए कोई जगह नहीं है। यह सुनकर मुन्नी चिल्ला उठी और सफेद कपड़ों फेंक दिए उसके अंदर की बड़ी लड़की जो अभी तक दूसरों के लिए अनजान रही, ने पहली बार आवाज उठाकर पूछा.... अब तक मैं इस चार दिवारी में दम घुटकर मर रही थी तब आपलोग कहाँ थे.... मेरे मन को, मेरे चाह, मेरी पसंदों को, मेरे सपनों को जब कुचला जा रहा था तब आपलोग क्या अंधे थे ...वह आदमी

जिन्होंने मुझे इंसान का दर्जा नहीं दिया...मेरी छोटी-सी भी तमन्ना पूरी नहीं की क्या उसके लिए मैं अपने जीवन के पूरे रंग भूल जाऊँ और मेरे सपनों को सफेद कपड़ों से ओढ़ लूँ... नहीं कभी नहीं....।

यह कहते हुए वह उस घर से निकल गयी.... और पंख फैलाकर आसमान में उड़ने लगी। वह रंगों में उतर गयी और अपनी कलाई में खिल-खिलाती रंग-बिरंगी चूड़ियाँ पहन ली। उन चूड़ियों के साथ वह भी खिल-खिलाकर हंसने लगी। लोगों ने उसको पगली कहाघमंडी बुलाया... वह अपने आपसे प्यार करने लगी थी और उसपर अपनी सभी तमन्नाओं को पूरा करने का नशा चढ़ा था... लोगों के सवालियों को उसने चूड़ियों की खनक से उसने नजरअंदाज कर दिया। वह अपने चूड़ियों से हंस बोलकर, उनके साथ शरारत करके वह अपनी दुनिया में मस्त रही... अपने मन के अंदर की छोटी-सी मुन्नी को वह जिन्दा रखना चाहती थी... हमेशा-हमेशा के लिए



पिता का प्यार



सुश्री जे आर मालविका
सुपुत्री राखी पी ओ, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



एक पिता का प्यार अपूरणीय है। वह अपने बच्चे को अलग तरह से प्यार कर सकता है, लेकिन यह हमेशा उसके दिल से आया है। इस दुनिया में कुछ भी इस भावना को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है कि हमारे पिता का प्यार हमें दे सकता है क्योंकि उनका प्यार शाश्वत, धर्मी और बिना कोई शर्त का है। सबसे पहले एक पिता का प्यार शाश्वत होता है। जैसे-जैसे आप बड़े होंगे, वह आपको एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाने के लिए आपका मार्गदर्शन करेगा। भले ही वह विकलांग है लेकिन वह आपका साथ देने की कोशिश करेगा। वह आपके जीवन के पहले सेकंड से आपके साथ रहे थे और आपकी आखिरी सांस तक रहेंगे।

दुसरे, पिता का प्यार स्थायी होता है और वह अपने बच्चे को शिष्टाचार भी सिखाता है। जब एक पिता अपने बच्चे को अनुशासित करने की कोशिश करता है तो उसके पीछे भी उनके बच्चे के प्रति अपार स्नेह ही होता है लेकिन बच्चे कभी-कभी उनके प्यार को गलत समझ लेते हैं कि उसके पिता उसके दुख का कारण है। यह कभी-कभी बहस का कारण बन जाता है लेकिन इन सब के पीछे पिता का अपने संतान के प्रति मोह को ही दर्शाता है और माता-पिता कभी भी अपने संतान के साथ बुरा होते हुए नहीं देख सकते हैं, इसीलिए कभी कभी उनको ठोस कदम भी उठाना पड़ता है।

निःसंदेह एक पिता के प्यार की कोई बंदिश नहीं होती। चाहे कुछ भी हो जाए, वह हमेशा आपसे प्यार करेगा। वह अपने बच्चे की भलाई के लिए सब कुछ त्याग देगा। अपने अटूट प्रेम के कारण वह अपने बच्चे के लिए सबसे अच्छा देने के लिए बिना शर्त हर परीक्षा का सामना करेगा। वह वास्तव में अपने प्यार के लिए सब कुछ करेगा।

एक पिता जो प्यार दे सकता है, उसकी जगह कोई नहीं ले सकता। वह आपको सदा पवित्र प्यार करेगा। इसलिए हम सभी को उस प्रेम की सराहना करनी चाहिए जो हमारे पिता देते हैं, क्योंकि उन्होंने हमें वह बनने में मदद की जो हम आज हैं। प्यार करने वाले पिता जो प्रशंसा, समर्थन और शर्तहीन प्यार प्रदान करते हैं, वे अपनी बेटियों को आत्मविश्वास और उच्च आत्म-सम्मान का उपहार देते हैं। जिन बेटियों में ये गुण होते हैं, वे

खुश और सफल रहती हैं क्योंकि उनपर उनके पिता का आशीर्वाद होता है। इससे भी बेहतर ऐसा करने के लिए पिताजी को असाधारण गहराई में जाने की जरूरत नहीं है। केवल उपस्थित रहना, प्रोत्साहित करना और एक अच्छा श्रोता होना अक्सर सभी बेटियों को फलने-फूलने की आवश्यकता होती है। यदि पिता अपने बच्चों को स्कूल में अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, अकादमिक रूप से संघर्ष करते समय उनकी मदद करते हैं और उन्हें अकादमिक सहायता प्राप्त करने के लिए उपकरणों तक पहुँच प्रदान करते हैं तो बेटियाँ आश्चर्यजनक रूप से सफल हो सकती हैं।

गृहकार्य में मदद करने या बेटियों को चुनौतिपूर्ण पाठ्यक्रम लेने के लिए प्रोत्साहित करने जैसे छोटे कार्य एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। स्कूलों में स्वेच्छा से काम करने वाले पिता से शाबित होता है कि शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है। कुछ हालातों में ज्यादातर लड़कियाँ स्वयं में आत्मविश्वास की कमी महसूस करती हैं। कुछ के लिए यह एक छोटी-सी बात है। दुर्भाग्य से दूसरों के लिए यह बहुत ही दर्दनाक हो सकता है। खराब बॉडी इमेज वाली लड़कियाँ सामाजिक रूप से खुद को अलग-थलग कर सकती हैं, जिस तरह से वे दिखती हैं, उससे वे परेशान हो सकती हैं और तो और उनकी आत्मविश्वास भी खो सकती हैं। अंततः वे अवसाद, चिंता आदि जैसे विकार विकसित कर सकते हैं।

जबकि प्रत्येक मात-पिता को उनके बच्चे सुंदर ही लगते हैं। पिता अपने बेटियों में आत्मविश्वास लाकर उन्हें आत्मगर्वित बनाते हैं और उन्हें जीवन में ऊँची से ऊँची सफलता पाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। बेटियों को अच्छे पिता की जरूरत होती है। वास्तव में पिता-पुत्री के संबंधों के महत्व को कम आँकना लगभग असंभव होगा। जिन युवतियों का अपने पिता के साथ सकारात्मक संबंध होता है, वे प्रारंभिक काल से ही सफलता की सीढ़ी पर अपना कदम रख चुके होते हैं। पिता-पुत्री के बीच अच्छा रिश्ता होना आवश्यक है। इससे उनमें उच्च आत्मसम्मान विकसित होता है। उनका मानना है कि वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं और वे ऐसा करने के लिए कड़ी मेहनत करने के महत्व को समझते हैं।

निःस्वार्थ प्यार करने वाले, सक्रिय रूप से समर्थन करने वाले पिता वाकई प्रशंसा और प्रोत्साहन के पात्र हैं। बेटियों को सफल बनाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनसे केवल लाभ ही लाभ होता है। लड़कियों को अक्सर रक्षक और बचावकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कभी-कभी यह अच्छी बात होती है। हालांकि साहसी बनने की इच्छुक बेटियों को पालने के लिए, अपनी समस्याओं को हल करने के लिए वे स्वयं सक्षम हैं और जो जोखिम लेने में सक्षम होती हैं, उनके पिता को इन प्रवृत्तियों के खिलाफ जाना चाहिए। इसके बजाय वे अपनी बेटियों को यह बताने में ध्यान केंद्रित कर सकते हैं कि वे कुछ भी कर सकने में सक्षम हैं और उन्हें ऐसा करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

संगत



सर्जींद्र कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

अक्सर हम कई बार ऐसे लोगों के बीच आ जाते हैं जहाँ हम अच्छे और बुरे लोगों की संगत में फर्क नहीं समझ पाते हैं। यह जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। ऐसे में कुछ बुरे लोग हमें भी अपने जैसे बनाने की कोशिश में रहते हैं और ऐसा करके उन्हें काफ़ी आनंद भी मिलता है। ऐसे लोग ना तो खुद आगे बढ़ते हैं और ना किसी को आगे बढ़ने देते हैं।

अब अच्छे लोगों की क्या खासियत होती है। अच्छे लोग आपको आगे बढ़ने की सलाह देने के साथ-साथ आपकी प्रेरणा के स्रोत भी बनते हैं। कई लोग अपने जीवन स्तर में काफ़ी सुधार कर चुके होते हैं क्योंकि उनके साथ कुछ ऐसी गतिविधियाँ थी जो उन्हें कुछ अच्छे लोगों से सीखने को मिली अपने साधनों का सही उपयोग कहाँ और कैसे करना है ये वो भलीभाँति समझ सकते हैं। अक्सर कई लोग उन लोगों के बीच बैठना पसंद करते हैं जो सिर्फ उनकी झूठी तारीफ करते हैं। लेकिन आप बस एक बार उनसे अपने लिए मदद की उम्मीद करके देखिएगा। आप खुद समझ जायेंगे कि वह हमारे हितैषी है या नहीं।

नीम कड़वा जरूर होता है पर वह बहुत बीमारियों में फ़ायदेमंद है। कुछ लोग नीम की तरह होते हैं। लेकिन वो ही आपके सच्चे हितैषी भी होते हैं। ऐसे लोगों से हमेशा आपको फायदा ही मिलता है क्योंकि उनको जब आपकी बुराई करनी होती है तो वो आपके पीठ पीछे नहीं करते हैं। बल्कि वो आपके सामने ही आपकी आलोचना कर देंगे। उनकी बातें बिलकुल खरी और सत्य होती है।

अब मैं बुरे लोगों की बात करूँ तो वो नकारात्मक पहलुओं को तुरंत पकड़ते हैं और जब हम उनके साथ रहना शुरू करते हैं तो हमारे अन्दर भी वो ही नकारात्मक भाव पलने लगते हैं। हमारी सोच भी उन्हीं के जैसी होने लगती है। क्योंकि एक दुसरे में घुल - मिलने के लिए हमें भी उनके जैसा ही बनना पड़ जाता है। ये मानव की प्रकृति है कि वो नकारात्मकता की ओर जल्दी ही आकर्षित हो जाता है जिसका प्रभाव उन्हें तब दिखाई पड़ता है जब कोई उनकी आशाओं को रोंधकर उनसे आगे निकल जाता है।

कई बार तो इतनी देर हो चुकी होती है कि मुकाम हाथ से पूरी तरह निकल जाता है। जो लोग मीठा बोलते हैं आपको उनसे सतर्क रहने की जरूरत है। हो सकता है कि वो आपके हितैषी ना हो। मैं ये नहीं कहता कि सभी लोग एक जैसे ही होते हैं। कुछ लोग आपकी परवाह करने वाले भी होंगे हीं।



श्रीमती उषा बेटी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

नागफ़नी

शुष्क था मौसम
उस रेतीले रेगिस्तान में
तन्हा-तन्हा तड़पती रही
एक नागफ़नी बंजर वीरान में

काँटों से भरा शरीर
पर दिल उसका नर्म था
बातें करने के लिए कोई तो मिले
इन तमन्नाओं में डूबा था

दूर से जब आवाज़ सुनी
चहक उठी वो नागफ़नी
रेगिस्तान से गुज़रे मुसाफ़िर
जब रुके उसके पास आकर

यहाँ गाढ़ लेंगे तंबू
आज की रात यहीं ठहरें
ऊँट से उतरे दो मुसाफ़िर
धूप और थकान से भरे

तंबू के अंदर से निकलती वो
मधुर संगीत, खिलखिलाती आवाज़
आनंद जिसका लेते हुए
रात भर जागी वो नागफ़नी

सुबह उठकर जब वो मुसाफ़िर
जाने को हुए तैयार
आँखें भर आई नागफ़नी की
और दिल में मायूसियत थी

ऊँट पर चढ़ने से पहले
जब आई एक यात्री की नजर में-
देखो यार... दुर्लभ किस्म की है
प्रियतमा को दूँगा उपहार मैं

जड़े टूटते वक्त नागफ़नी की
दर्द से वह बहुत रोई
पर ये सोचकर दिल खुश था
अकेलेपन से वह अब दूर हुई

लौटकर मुसाफ़िर घर पहुँचा
दौड़कर आई उसकी प्रियतमा
देख मैं तेरे लिए क्या लाया
कहते हुए दे दी उसको नागफ़नी

मेरे कैक्टस गार्डन में
एक नया मेहमान आया है
खुशी से उछलती हुई
उसकी प्रियतमा बोल पड़ी

बहुत दोस्त मिले बगीचे में
मालकिन भी प्यार से बतलाती है
खुशी से वह झूम उठी
तमन्ना अब उसकी पूरी हुई

कंटीली कीलें, फूलों में बदली
चमकीले से फूल उगने लगे
जिनकी महक बगीचे में फैले
तो देखने लोग आने लगे

किसी ने खूब ही कहा -
प्यार और दुलार से
पत्थर दिल भी पिघलते हैं
नागफ़नी के काँटे भी
फूलों से खिलने लगते हैं।



फिर उसी कश्मकश में आ फंसे



बबिता

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

फिर उसी कश्मकश में आ फंसे
निकलने में जिससे ज़माने लगे

सरहद एक महफूज़ दीवार तो बनी
जाने कितने घरों के ख़ज़ाने लगे
फिर भी गोलियां मिलने आईं
दिल्ली-लाहौर थरथराने लगे
वो मिट्टी खोदने लगे उधर
इधर तुम भी आवाज़ें लगाने लगे

हर रोज़ नया सवाल है ज़िन्दगी
सीखे जो जवाब सब भुलाने लगे
क्या सच में मुफलिसी कम हुई गांव की
शहर में लाख चाहे कारखाने लगे

आखिर बर्बादी तय हो गई
अब हम भी ग़ज़ले गाने लगे
वो दौर था जब भूख थी इश्क की
अब हम कबूतरों को दाना खिलाने लगे

हुई तरफदारी सच्चे इश्क की
हम उठकर महफ़िल से जाने लगे
हुआ मालूम के तू भी है औरों जैसा
अब हमें भी चेहरे सब रिझाने लगे

कौड़ियों में बिक गई तुम तो, लानत है
रिझाने में थे तुमको सौ बहाने लगे

जब ज़िल्लत के कुएँ से सर उठाया गुरुर ने
हम हथ पुराना याद दिलाने लगे

पूछा मेहनत का हूँ गुलाम या ख़्वाबों का
तजुर्बे इधर उधर बातें घुमाने लगे
शिकारी का बच्चा कोई भूखा रोया
और जंगल में परिंदे फड़-फड़ाने लगे

किताबों ने की कोशिश मैं खुश रहूँ
ये अधूरे ख़्वाब कलेजा खाने लगे
जन्नत कैसी होगी जब पूछा मुझसे
किस्से बचपने के याद आने लगे

जवानी तो ऐसे ही तेरे कांधे पर गुज़र जाएगी
काश बुढ़ापे में भी यारों के हाथों से ठिकाने लगे
ताकि मौत भी उतनी ही सुहानी लगे

एक ख़्वाहिश करे दूजी ख़्वाहिश कुर्बान
एक हाथ लगी तो दूजी सताने लगे
पूछा पता जब फकीरो से सुकून का,
जाहिल नसीहतें गीता, कुरान की सुनाने लगे

फिर उसी कश्मकश में आ फंसे
निकलने में जिससे ज़माने लगे



श्री वी आर राजीव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बचपन

मुझे मेरा बचपन लौटा दो,
वो बारिश के पानी में कशती बहाना...
वो मस्ती के दिन वो मासूम शैतानी
वो फिर से याद दिला दो
मुझे मेरे यारों से मिला दो

कहाँ है वो मौसम वो गुजरा जमाना
वो झूलों में झूलना और झूलाना
जिन पर बीता बचपन सुहाना
वो दिन लौटा दो
मुझे मेरे यारों से मिला दो

वो झूठा-सा अपना लड़ना-झगड़ना
फिर हँसकर खुद ही उन्हें मनाना
जिन संग बीता बचपन सुहाना
ऐसे यारों से मिला दो
मुझे मेरे यारों से मिला दो

वो लूडो की गोटी काटना और फेंकना
राजा-मंत्री खेल में चोर को ढूँढना
वो गुजरे हुए पल फिर से दिला दो
मुझे मेरे यारों से मिला दो

पुरानी कापियों में खाली पन्नों को खोजना
फिर दोस्तों की कापियों से पन्ने चुराना
मुझे मेरी यादों के पन्ने दिला दो
वो बीता जमाना फिर लौटा दो
मुझे मेरे यारों से मिला दो

बचपन





अंकित सिंह
लेखापरीक्षक

आम लोग

मेरी कविताओं में बंद है
आम लोगों का इतिहास
जिन्हें सत्ता से शिकायत का वक्त्र नहीं था,
और न थी समाज से लड़ पाने की क्षमता।

वो जयकारों में भी पीछे थे
और क्रांतियों में भी आखिरी।
उनकी लड़ाई खाने और एक छत की थी,
आखिरी दिन तक यही लड़ाई थी
उनकी क्रांतियां वही तक सीमित थीं।
ज्यादा से ज्यादा कुछ हुआ तो कभी कभी
इन आम लोगों ने प्रेम भी किया
और उसमें भी ये हारे और चुपचाप मान लिया।

वो गया तो इस शहर से
अपने हिस्से का आसमान भी ले गया।
वो कभी आये जो वापिस
तो दिन ढलने पाएगा
वो अपने साथ सुकून की सारी शाम भी तो लेकर गया।





शशि कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

ज़िंदगी

सफर में धूप तो बहुत होगी तय कर सको तो चलो,
भीड़ तो बहुत होगी, नई राह बना सको तो चलो ।
माना कि मंज़िल दूर है एक कदम बढ़ा सको तो चलो,
मुश्किल होगा सफर, भरोसा है खुद पर तो चलो ।



हर पल हर दिन रंग बदल रही ज़िंदगी,
तुम अपना कोई नया रंग बना सको तो चलो ।
राह में साथ नहीं मिलेगा अकेले चल सको तो चलो ।
ज़िंदगी में कुछ मीठे लम्हें बुन सको तो चलो ।
महफूज़ रास्तों की तलाश छोड़ दो धूप में तप सको तो चलो ।
छोटी -छोटी खुशियों में ज़िंदगी ढूँढ सको तो चलो ।
यही है ज़िंदगी कुछ ख्वाब चन्द उम्मीदें,
इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो ।
तुम ढूँढ रहे हो अंधेरो में रोशनी, खुद रोशन कर सको तो चलो ।
छोटी -छोटी खुशियों में ज़िंदगी ढूँढ सको तो चलो ।

यही है ज़िंदगी कुछ ख्वाब चन्द उम्मीदें,
इन्हीं खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो ।
तुम ढूँढ रहे हो अंधेरो में रोशनी, खुद रोशन कर सको तो चलो ।
कहां रोक पायेगा रास्ता कोई जुनून बचा है तो चलो ।
जलाकर खुद को रोशनी फैला सको तो चलो,
गम सह कर खुशियां बांट सको तो चलो ।
खुद पर हंसकर दूसरों को हंसा सको तो चलो,
दूसरों को बदलने की चाह छोड़ो, खुद बदल सको तो चलो ।



ज्योति
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बड़ी इमारतें

ये इमारतें जो बड़ी-बड़ी मीनार हैं, ये सिर्फ दीवार हैं,
झूठी शान, दिखावटी रिश्ते और कुछ बड़े-बड़े नाम हैं।
हृदय में धधकती ईर्ष्या, होठों पर झूठी मुस्कान है।
ये इमारतें जो बड़ी-बड़ी मीनार है, ये सिर्फ दीवार हैं,
रंगहीन दुनिया, अकेलापन, आत्मा में कपटी विचार हैं,
झूठी दौलत झूठी शोहरत और कहने को बड़े-बड़े नाम हैं।
सिसकती माँ, असहाय पिता, सारे रिश्ते लाचार हैं,
रात काली है और लंबी गुमनाम सी शाम है।
ये इमारतें जो बड़ी-बड़ी मीनार है, ये सिर्फ दीवार हैं,
मन को चैन नहीं, दिन है तो रैन नहीं,
कलह है, बात-बात में विवाद और सब परेशान हैं।
ये इमारतें जो बड़ी-बड़ी मीनार है, ये सिर्फ दीवार हैं,



कृष्णकुमार एस
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नारी

हे देवी आप बहुत कृपालू हैं
जन्म से आप सबकी प्रियकर हैं
बचपन में आप सबकी साथी थीं
आपकी मुस्कान सूरज से भी सुन्दर है

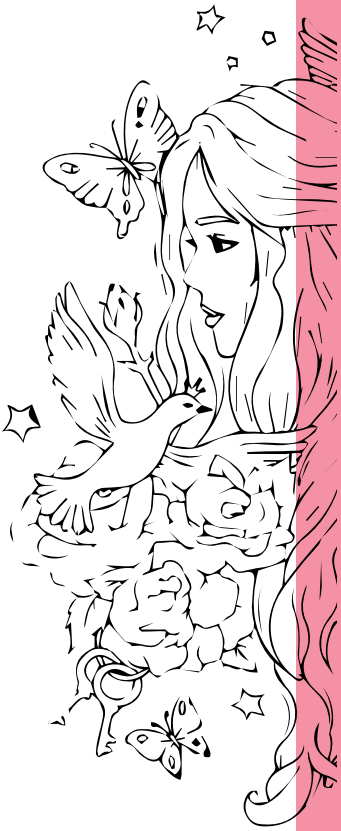
मैं हर रोज़ अतिभावात्मक हूँ कि
आपका मन कैसे समुद्र के फर्श जैसा बन गया ?

मैं हर वक्त सोचता हूँ कि
आपकी मुस्कान सितारों की चमक जैसी ।
माँ बनकर आपने मुझे कितनी बार चुम्बन दिए,
आपका विशिष्ट प्रेम मेरे जीवन की आत्मा है ।
बच्चे की देखभाल और प्रेम कोई और
आपसे अच्छी तरह से नहीं कर सकती,
क्योंकि आपका प्रेम भाव निस्वार्थ है ।

स्वार्थता से भरी इस दुनिया में आप कैसे निःस्वार्थ बन गयी माता ?

पत्नी होकर आप घर की लक्ष्मी देवी बन गई ?
मेरा जीवन साथी बनकर मेरे जीवन के सुख दुःख में सहयोग दिया ।

पुत्री होकर आपने मेरी खुशियों को हजार बार बढ़ा दिया,
आपको लोरियां सुनाते-सुनाते मैंने भी पहचान लिया कि
आप इस मनुष्य कुल अमूल्य उपहार हो ।
हे ! नारियों आप सबके चरणों में मेरा हार्दिक विनीत नमन ।



मेरी कश्मीर यात्रा



सिद्धार्थ के अजित
लेखापरीक्षक

भारत के सबसे उत्तरी भाग में स्थित जम्मू और कश्मीर अपने खूबसूरत और बर्फ से ढके पहाड़ों, परिदृश्यों, सेब और केसर के खेतों आदि के लिए जाना जाता है। मेरी पहली कश्मीर यात्रा ने मुझे उनकी संस्कृति, जीवन शैली, स्थानों और वन्य जीवन की मनमोहक यादें और समझ दी।

23 मार्च 2023

हमारे ग्रुप में 12 सदस्य थे, सभी मेरे परिवार के सदस्य हैं। हमने अपने प्रस्थान के लिए मार्च के अंत को चुना क्योंकि स्कूल की परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी थीं और मौसम श्रीनगर की यात्रा के लिए उपयुक्त था। हम सुबह तिरुवनंतपुरम से चले और दोपहर में श्रीनगर हवाई अड्डे पर पहुँचे जहाँ हमारे टूर गाइड, सह ड्राइवर और उसका बेटा हमारा इंतजार कर रहे थे। हमारी पहली यात्रा नव पुनर्निर्मित इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्यूलिप गार्डन की थी। हालाँकि बहुत सारे फूल अभी भी खिलने की अवस्था में थे, फिर भी यह देखने लायक एक सुंदर दृश्य था। फूलों की कतारें लंबी परिदृश्य को सजा रही थीं।



24 मार्च 2023

अगली सुबह हमने गुलमार्ग की यात्रा शुरू की। गुलमार्ग "भारत में शीतकालीन खेलों का गढ़" है और इसे एशिया के सातवें सर्वश्रेष्ठ स्की गंतव्य के रूप में दर्जा दिया गया था। पहाड़ी की तलहटी में पहुँचने के बाद, हमने 'गुलमार्ग गोंडोला' के माध्यम से पहाड़ी की चोटी तक अपनी यात्रा शुरू की। जब हम बर्फ से ढके पहाड़ पर रस्सी के रास्ते से चढ़े तो यह दृश्य बेहद लुभावना था। गुलमार्ग की गोंडोला यात्रा को दो चरणों में विभाजित किया गया है। पहला चरण सामान्य पर्यटकों के लिए है और दूसरा चरण जो पहाड़ से आगे तक जाता है स्कीयर के लिए है। हमने केवल पहले भाग की यात्रा की। वहाँ बहुत सारे पर्यटक और स्थानीय गाइड थे और स्नो बाइक, स्कीइंग, स्लेज आदि जैसे बहुत सारे आकर्षण थे।

25 मार्च 2023

अगला गंतव्य दूधपथरी था जिसका अर्थ है 'दूध की घाटी'। घास के मैदानों से बहता पानी दूर से दूधिया दिखता है और पूरे साल बहुत ठंडा रहता है। विशाल घास के मैदानों पर हरी-भरी घास और बड़े पत्थरों के ऊपर से बहती चांदी जैसी चमकती धाराएँ इसकी सुंदरता को और बढ़ा देती हैं। विशाल घास के मैदानों के बाद हम पूरी तरह से बर्फ से ढके पेड़ों और पहाड़ों को देख सकते हैं जहाँ से नदियों का उद्गम होता है। बर्फीली पहाड़ियों पर छोटे-छोटे इग्लू बनाए जाते हैं जहाँ पर्यटकों के लिए जलपान उपलब्ध रहता है। बर्फबारी शुरू होने के बाद दृश्यता बहुत कम हो गई इसलिए हमें वापस लौटना पड़ा।

26 मार्च 2023

हमारी अगली मंजिल पहलगाम थी। हम रास्ते में सड़क के दोनों ओर सरसों और केसर के खेतों से होकर गुजरे। हाईवे से मुड़ने के बाद हम शहतूत और सेब के खेतों से होकर गुजरे। हम दोपहर में पहलगाम पहुँचे। पहलगाम में परिवहन के लिए बाहरी टैक्सियों की अनुमति नहीं है। तरोताजा होने के बाद, दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए स्थानीय टैक्सियों की व्यवस्था की गई। सबसे पहले हम बैसरन घाटी गये। हमारी लगभग 5 किलोमीटर की खड़ी यात्रा के लिए घोड़ों की व्यवस्था की गई थी। एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण जिसे इसके प्राकृतिक वैभव के कारण "मिनी-स्विट्ज़रलैंड" करार दिया गया है। यह पहाड़ की चोटी पर एक हरा-भरा घास का मैदान है जिसके दोनों ओर बर्फ से ढके पहाड़ हैं और घने देवदार के जंगल हैं। प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेते हुए कुछ समय बिताने के बाद, हम पहाड़ से

नीचे आए। खड़ी पहाड़ियों पर घुड़सवारी साहसिक थी। पहलगाम एक पहाड़ी घाटी में एक स्थानीय गाँव जैसा था। चूँकि यह एक घाटी में स्थित है, हालाँकि आस-पास बर्फ का एक भी टुकड़ा या बर्फ नहीं गिरी थी, हवा बहुत ठंडी थी। होटल के अंदर भी हमें गर्म रहने के लिए अपने शरीर को कोट, थर्मल, स्वेटर से ढकना पड़ता है।



27 मार्च 2023

हमने सुबह स्थानीय टैक्सी के माध्यम से पहलगाम के बाकी हिस्सों में घूम सबसे पहले हमने पहलगाम से 16 किलोमीटर दूर स्थित चंदनवारी का दौरा किया। यह शहर अमरनाथ यात्रा का प्रारंभिक बिंदु है जो हर साल जुलाई-अगस्त के महीनों में होती है, जिसमें सैकड़ों हजारों पर्यटक आते हैं। फिर हम पहलगाम से 15 किलोमीटर दूर स्थित बेताब घाटी गए। घाटी को इसका नाम वहाँ फिल्माई गई बॉलीवुड फिल्म 'बेताब' से मिला। उसके बाद अंततः हम अरु घाटी की ओर निकले। अरु घाटी अपने सुंदर घास के मैदानों, शांतिपूर्ण वातावरण और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह गांव कोलाहोई ग्लेशियर, टार्सर-मार्सर झीलों और कैटरीनाग घाटी के ट्रैकर्स के लिए एक आधार शिविर है। कोलाहोई कश्मीर घाटी का सबसे बड़ा ग्लेशियर है, और माउंट कोलाहोई (5425 मीटर) के पास स्थित है, जो घाटी की सबसे ऊँची चोटी है। भोजन और आवास के लिए कई होटल, रेस्तरां और झोपड़ियाँ उपलब्ध हैं। हम दोपहर में श्रीनगर लौट

आए। उस दिन के लिए हमारे ठहरने की व्यवस्था डल झील में एक हाउस बोट में की गई थी। शाम को डल झील की सैर के लिए शिकारे की व्यवस्था की गई। यह कश्मीर घाटी का एक सांस्कृतिक प्रतीक है, जिसका उपयोग न केवल आगंतुकों को लाने-ले जाने के लिए बल्कि फलों, सब्जियों और फूलों की बिक्री के लिए भी किया जाता है; मछली पकड़ने और जलीय वनस्पति की कटाई के लिए थी।



28 मार्च 2023

चूँकि, यह यात्रा का आखिरी दिन था, हमने सुबह छोटे-छोटे स्थानीय दर्शनीय स्थल और खरीदारी की। डल झील में तैरता हुआ डाकघर सह संग्रहालय डल झील के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। दोपहर का भोजन करने के बाद, हमने उच्च सुरक्षा जांच के कारण अपेक्षित समय से बहुत पहले हवाई अड्डे के लिए अपनी यात्रा शुरू की, जिसमें समय लगता है। जाँच पूरी होने के बाद हमने अपने भरोसेमंद ड्राइवर और उसके बेटे को विदाई दी और अपनी अविस्मरणीय यात्रा समाप्त की। हम आधी रात के करीब घर वापस पहुँचे।

यह कश्मीर यात्रा मेरे साथ-साथ मेरे परिवार के सदस्यों के लिए जम्मू-कश्मीर की सुंदरता को समझने का एक शानदार अवसर थी। यदि संभव हो तो मैं सेब और शहतूत के खेतों का आनंद लेने के लिए दूसरे मौसम में कश्मीर जाना चाहूंगा।



तिरुवन्नामलाई की मेरी पवित्र यात्रा



विष्णुदेवी राजसेनन्
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

यात्रा करना मेरा शौक है। हालाँकि मैंने भारत के बाहर कई जगहों का दौरा किया है, फिर भी भारत में घूमने लायक बहुत सारी जगहें हैं। मेरे पति की सेवानिवृत्ति के बाद हम सबसे पहले जिस स्थान पर गए वह तिरुवन्नामलाई था।

प्रसिद्ध अरुणाचलेश्वर मंदिर, भगवान शिव के पंच भूत मंदिरों में से एक, तिरुवन्नामलाई में स्थित है। अरुणाचिला पहाड़ी के चारों ओर अष्टलिंगम या 8 लिंगम तिरुवन्नामलाई की सुंदरता बढ़ाते हैं। तिरुवन्नामलाई में सबसे महत्वपूर्ण पेशकश "गिरिवलम" या अन्नामलाई पहाड़ी की परिक्रमा है। गिरिवलम इंद्र लिंगम, अग्नि लिंगम, यम लिंगम, निरुथी लिंगम, वरुण लिंगम, वायु लिंगम, कुबेर लिंगम से शुरू होकर एसन्या लिंगम पर समाप्त होने वाले आठ लिंगों के चारों ओर घूम रहा है। करीब 14 किलोमीटर लंबी गिरिवलम को पूरा करने में महज 4.30 घंटे लगेंगे। रास्ते में हम संतों को भगवान शिव के मंत्रों का जाप करते हुए देख सकते हैं। यह भी सुना कि गिरिवलम की पूजा के लिए सबसे अच्छा दिन पूर्णिमा है।

रमण महर्षि का प्रसिद्ध आश्रम तिरुवन्नामलाई में स्थित है। बड़े ध्यान कक्ष में रमण महर्षि की मूर्ति के सामने बैठने से हमें सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।

वहां से हमने स्कंदाश्रम का दौरा किया। स्कंदाश्रम एक गुफा है जहां भगवान रमण महर्षि 1916 से 1922 तक रहे थे। इस गुफा तक पहुंचने के लिए हमें 1.4 किलोमीटर की चढ़ाई चढ़नी पड़ी। यह ध्यान के लिए भी एक उत्तम स्थान है। आश्रम के अंदर पुराने पेड़ों और पीछे की ओर पवित्र अरुणाचल पहाड़ी के कारण आसपास का वातावरण शांतिपूर्ण है। बंदर, हिरण, मोर जैसे जानवरों की मौजूदगी इस जगह की सुंदरता को बढ़ा देती है।

स्कंदाश्रम के पास एक और गुफा है "विरुपाक्ष गुफा"। ऐसा माना जाता है कि रमण महर्षि ने अपना अधिकांश जीवन इसी गुफा और इसके आसपास बिताया था। यह किसी भी साधक के ध्यान के लिए सबसे अच्छी जगह है और यह गुफा मन को मोहने वाली थी।

कुछ ही मिनटों में कोई भी गहरे ध्यान में जा सकता है। यह भी कहा जाता है कि समाधि के तुरंत बाद उनका शरीर राख में बदल गया। ऐसा माना जाता है कि पवित्र राख को यहां परिवर्तन पर संरक्षित किया गया है। इस गुफा में पूरी तरह से सन्नाटा रहता है और मोबाइल फोन सहित हमारा सामान गुफा के अंदर ले जाने की अनुमति नहीं है।

कई अन्य मंदिरों के विपरीत, पहली बात जो मैं कहूंगी वह यह है कि यह वाणिज्यिक स्थान नहीं है। इसके अलावा बहुत से लोग इस स्थान की ओर आकर्षित नहीं होते हैं क्योंकि केवल आत्मज्ञान के मार्ग पर चलने वाले लोग ही रमण महर्षि की ओर आकर्षित होते हैं। दूसरे, वहां एक गहरी शांति है जो मैंने पहले कभी किसी अन्य स्थान पर महसूस नहीं की थी।



सुश्री अनिता दास
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पर्यावरण बनाम विकास

“वृक्ष, पानी और शुद्ध हवा, जीवन जीने की अनमोल दवा” ।

मानव-शरीर पंचतत्व से निर्मित है- पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश तथा वायु। यही सब मिलकर प्रकृति एवं पर्यावरण का निर्माण करते हैं। मनुष्य के स्वस्थ एवं दीर्घायु रहने के लिए इन तत्वों में संतुलन होना आवश्यक है। प्रकृति ने सुख, समृद्धि एवं कल्याण हेतु ढेर से निःशुल्क उपहार (यथा जल, वायु, प्रकाश, पहाड़, खनिज, वन संसाधन आदि) प्रदान किए। किंतु प्रकृति रूपी माँ ने मानव को एक नैतिक जवाबदेही भी सौंपी कि वह अपने हित-पूर्ति हेतु उसके परिवेश से संबंध सभी जीवों, वनस्पतियों तथा जड़ पदार्थों के जीवन की रक्षा करेगा। किंतु मानव ने आत्महित अभीष्ट मान लिया और अन्य प्रतिबद्धताएँ उसके लिए द्वितीयक हो गईं।

उसने अपने सुख, एशोआराम के लिए प्रकृति का न केवल विदोहनकरना शुरू किया अपितु उसे चूसना शुरू कर दिया। परिमाणतः वन्य प्राणियों एवं वनस्पतियों के जीवन के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया। इसके अतिरिक्त जड़ वस्तुओं (जैसे प्राचीन इमारतें, शिलालेख आदि) ने अपनी अनुपम पहचान खोनी प्रारंभ कर दी है। यहाँ तक कि आज स्वयं मानव-जाति पर खतरे के बादल मँडराने लगे हैं-

“विकास और विज्ञान की ये कैसी हवा आयी,
खुद के हाथों से हमने खुद की चिता सजाई।”

भौतिक संसाधनों का अधिकाधिक संकेन्द्रण तथा अनंत लालसाओं ने समूचे मानवीय जगत में विकास का जो मार्ग प्रशस्त किया। उसने सतत् रूप से बढ़ती हुई आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए वन्य भूमि को कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित किया और जंगलों को काटकर लकड़ी का प्रयोग ईंधन तथा साज-सज्जा हेतु किया। वन्य प्राणियों को अपनी हवस का शिकार बनाया गया और मृत-अंगों का प्रयोग ड्राइंग-रूम की सुंदरता को निखारने के लिए किया गया। उद्योगों द्वारा उत्सर्जित अवशिष्ट पदार्थों को नदियों में बहाकर जलीय जीवों को खात्मा किया गया और आम आदमी को पीने योग्य पानी का संकट पैदा कर दिया गया। यातायात व परिवहन के साधनों तथा उद्योगों की चिमनियों के उत्सर्जित धुएँ ने शुद्ध वायु का अभाव उत्पन्न कर दिया तथा जेट विमानों तथा मनोरंजन के आधुनिक साधनों ने लाइलाज बहरेपन को जन्म दिया।

“ये शहर भी क्या शहर है, हवाओं में
धुआँ है...फिजाओं में जहर है।”

आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव के सोच में इस प्रकार का बदलाव आए कि वह व्यक्तिगत हित की बजाय सामूहिक हित को सर्वोच्च समझे। विकास और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक हैं। इसलिए विकास के नाम पर पर्यावरण की हत्या करना मानव जाति के लिए निश्चित रूप से आत्मघाती कदम होगा।



सुश्री कामिनी साँवरिया
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारतभूमि

कृष्ण की लीलाओं को आँचल में समेटे,
भारतभूमि बालपन को दुलारती है।
रणभूमि बनकर कुरुक्षेत्र में अर्जुन को ललकारती है।
चली-चलती है काल-डाल पर,
बढ़ती, घटती, सूखती है।
यह समय-वृक्ष के पत्तों पर गाथाएँ अपनी लिखती है।

इसने हरियाली, अकाल, बाढ़ देखे हैं,
इसने खुशहाली देखी, मसान देखे हैं।
सबकुछ अपने में समेटे, फिर नवौढ़ा बन,
प्रत्यूषा की किरणों से खुद को सँवारती है।

कहीं ब्रज की है गौ-रज यह,
कहीं रणभूमि का वीर-तिलक।
प्रेरणाओं का नित्य-स्त्रोत,
गाथाओं का भंडार हैं यह।
कितने ही इस पर जिए-मरे,
कुछ के नाम से यह जीती है।
भरतवंश की गाथा यह भारतभूमि कहलाती है।

यह कालचक्र की साक्षी है
यह नित-नूतन अभिलाषा है।
कमलपात की तरह जिसपर कोई विषय न ठहरा है,
गुजर गए, फिर नव-अनुभवों, नव-गाथाओं के लिए खिल जाती है।

यह देवी, देवभूमि है,
मनीषी इसका मनन करते हैं।
अनिकेतनों का निकेतन,
यति भी भ्रमण करते हैं।
गंगा, यमुना, गोदावरी जिसके चरण पखारती है,
सर ऊँचा कर खड़ा हिमालय नतमस्तक हो जाता है।

ऐसी भारतभूमि कहाँ शब्दों में बंध पाती है,
यह आश्चर्य-मंजूषा है,
हर-पल, हर-क्षण निश्चल सी जो नवजीवन सिखलाती है।





अमेया एस
सुपुत्री इंदुलेखा सजिकुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



श्रीलक्ष्मी एम
सुपुत्री श्रीमती ओमना मधुसूदनन
सहायक पर्यवेक्षक





अनश्वरा एस
सुपुत्री इंदुलेखा सजिकुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





अश्वन्त राम
सुपुत्र श्री चन्द्रशेखरन एम
लेखापरीक्षक



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय,
केरल, तिरुवनंतपुरम